

२४२८७

N. 152

गरज्ञान

१-१४

धन-देवचन्द्र चौवीसी

प्रकाशक, —

रिसागरजनपुस्तकालय

लोहाचट, मारवाड,

सूचना.

इस पुस्तकमें अशुद्धियें हैं उनका
शुद्धिपत्रक अन्तमें रक्खाहै अतः
पाठकगण सुधारकर पढ़े.

श्री जन एडवोकेट प्री० प्रेसमां बाडीलाल
बापुलाल शाहे छापी.

प्रत १०००, प्रथमावृत्ति: सन्ने १९२८

बीर सं० २४५४ विक्रम १९८५

अमूल्य ।

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાઈટ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૬૪૪૮૭ વર્ગીક

પુસ્તકનું નામ આનંદધન-દેવચંદ્ર
સીવીસી

વિષય ૫૩૬ : ૬૬૭



॥ ॐ अहं नमः ॥

श्री सुखसागरज्ञानविन्दु नं. १२, १३

श्रीआनन्दधन-देवचन्द्र

चौवीसी

खरतरगच्छाधीश्वरश्रीमत्सुखसागरजी

म० के वर्तमान प्रवृद्धर श्रीमद्हरि-

सागरजी म० के आज्ञानुयायिनी

श्रीमती सिंहश्रीजी म० के शि-

ष्या प्रतापश्रीजी म० की

शिष्या चैत्यश्रीजी म०

के सहपदेशसे-

— : प्रव्यसहायक : —

शेठ. रूपचन्दजी रीखवदासजी

गोलछा.



गौडराव विधापाठ १९४९
गौडराव
ॐ श्रीगणेशाय नमः
ॐ श्रीगणेशाय नमः

ॐ श्रीगणेशाय नमः

॥ श्रीमदानन्दघनजी स्तुति

सर्वदर्शनविख्यातो,

विश्ववन्द्यो मुनीश्वरः ।

ज्ञानीध्यानी प्रभोर्मक्तो,

विरागाणां शिरोमणिः ॥१॥

शुद्धधर्मापिदेष्टा च,

जनशासनद्योतकः ।

ध्यानिनामग्रणी मर्न्यो,

भावचारित्र्य साधकः ॥२॥

अध्यात्मोद्धारक पूज्यः,

समतानन्दभाक् च यः ।

आनन्दघनयोगी स,

जीयाद्भारतमण्डले ॥ ३ ॥

ले० बुद्धिसागर स्वरिः

 किञ्चिद्वक्तव्य 

मान्यवरपाठक ?

आज आपके सम्मुख

“श्रीआनन्दघन देवचन्द्र चौबीसी”

नामकी लघु पुस्तिका उपस्थित करते हैं , जो आकारमें छोटी है, परन्तु गुणों में गरीष्ठ है ,

यह पुस्तिका क्याहै मानो उन आर्ष पुरुषोंके पवित्र हृदयका आदर्शहै , इसके पढनेसे पूर्वकालके महात्माओंके हृदयगत भाव आप सहजही में अच्छीतरह जान सकेंगे कि वे कैसे अनुपम उच्च सम्यग् ज्ञानदर्शन चारित्रादि

गुणोंमें रमण करते थे.

गङ्गा सिन्धु नदीके समान
 पवित्र विचित्र रसमय देवाधिदेव
 सर्वज्ञ, श्री बीतरागदेवके अगम,
 अगोचर, अमर, अक्षय, अवि-
 नाशी, अरूपी अव्यापी, अनिन्द्रिय
 अलख, अबन्धक, अयोगी अरोगी
 अवेदी, अकर्मों, अलेशी, अना-
 हारी, अनास्ति अनुदयी अवि-
 षाकी, अयोनि असंसारी, अव्या-
 बाध, सच्चिदानन्दादि, अनन्त गुण
 वर्णन पूर्ण स्वामिसेवकभाव कार्य-
 कारणभाव, ध्यान-ध्येय-ध्यातृ-
 भावोंसे भरी हुई यह अप्रतिम

पुस्तिका है.

इसके सम्पादक परम मान्य-
वर स्याद्वादशैलीके कट्टरउपासक,
जैनागमज्ञाता, जैन धर्मके धुरन्ध-
रनेता।—आजीवन द्रव्याणुयोगके
अभ्याससे अध्यात्ममेंलीन, परम-
अव्याबाध समाधिसुधारसास्वादो
अध्यात्ममस्त महात्मा. योगिप्रवर
श्रीमदानन्दधनजा श्रुतसागर म-
न्थनकारक श्रीमद्देवचन्द्रजी म-
हाराज हैं

इनदोनों पूज्योंकी विद्यमा
नता अठारवींसेदीके पूर्व और
उत्तरकालमेंथी ऐसा इतिहासके

खोजनेसे निश्चित होता है

इस बीसवीं सदी में इन दोनों योगियों की शरीररूपसे अविद्यमानता होते हुए भी उनके हृदय द्रव्यसे निकले सुसम्बद्ध (अक्षर) शब्द-प्रवाह विजयवन्त वर्तते हैं उन्हीं शब्द श्रोतों में निरन्तर रमण करने-वाले योगनिष्ठ अध्यात्मज्ञानी श्रीमद्बुद्धिसागरसूरीश्वरजीने उन अगम्य अक्षरोत्पादकों के प्रति असाधारण भक्तिकोधारण करते हुए गीर्वाणगिरामें अत्यन्त भावपूर्ण उन महात्माओं की स्तुति की है उसे पाठकगण अन्यत्र इस-पुस्तकमें ही पढ़कर अनुमान कर स-

केंगेकि उपरोक्त महात्मा श्रीमदा-
नन्दघनजी श्रीमद्देवचन्द्रजी कैसे
 जानीथे.

इस पुस्तिकामें रही हुई स्तवन
 चौबीसीएँ कह महाशयोने अल-
 गरछाकर पुस्तिका रूपमें प्रकट
 कीहै परन्तु दोनो चौबीसीका एक
 साथलाभ उठानेवाले पाठकोंकी
 सुगमताहेतुसे “ लोहावट श्री
 हरिसागर जैन पुस्तकालय ” की

और से श्रीसुखसागर ज्ञान
 बिन्दु नं १२-१३ रूपमें बीकानेर
 निवासी श्रीमान् शेठ रूपचन्द्रजी
 ऋषभदासजी गोलछाके द्रव्यसहा-

यसे एकसाथ छपाकर प्रसिद्धकी जाती है अपने द्रव्यका सद्व्ययकरने से श्रेष्ठजी धन्यवादके पात्र हैं ?

इस पुस्तिकाको पाठक निरन्तर अभ्यासकर प्रभुभक्तिमें लीन होवें और अपनी आत्माको प्रकाशमय पवित्रनिर्मल बनावें यही प्रकाशककी हृदयाकांक्षा है इसमें छद्मस्थानवस्थाके हेतुसे संशोधन मुद्रणादिकरते समय अशुद्धिएं रह गई हों तो पुस्तिकाको बिद्वान् सज्जन पाठक शुद्धकर पढ़ें—

इत्यलं विस्तरेण

श्री हरिसागर जैन पुस्तकालयके
कार्य—कर्ता

इन्द्रचन्द्र पारख—लोहावट.

१४१६७

श्रीबीनरागाय नमोनमोऽस्तु ।



आनन्दघन चौवीसी

श्रीऋषभजिन स्तवन ॥

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे,

ओर न चाहुं रे कंत ॥

रीझ्यो साहेब संग न परिहरे रे,

भांगे सादिअनंत ॥ ऋषभ ॥ १ ॥

प्रीतसगाईं रे जगमां सहृ करे रे,
 प्रीतसगाईं न कोय ॥
 प्रीतसगाईं रे निरूपाधिक कही रे,
 सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ ॥२॥
 कोइ कंतकारण काष्ठ भक्षण करे रे,
 मिलसुं कंतने धाय ॥
 ए मेलो नवि कहिये संभवे रे,
 मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषभ ॥३॥
 कोइ पतिरंजन अतिघणो तप करे रे,
 पतिरंजन तन ताप ॥
 ए पतिरंजन में नवि चित्त धर्युरे,
 रंजन धातु मिलाप ॥ ऋषभ ॥४॥
 कोइ कहे लीलारे अलख अलख-
 तणी रे, लख पूरे मन आस ॥

दोषरहितने लीला नवि घटे रे,
 लीला दोषविलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥
 चित्तपसन्नेरे पूजनफल कहुं रे,
 पूजा अखंडित एह ॥
 कपटरहित थइ आत्म अरपणा रे,
 आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥

श्रीअजितजिन स्तवन ॥

पंथडो निहालूंरे बीजा जिनतणो रे,
 अजित अजितगुणधाम ॥
 जे तें जीत्यारे तेणे हूं जीतिओ रे,
 पुरुष किस्युं मुज नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥
 चर्मनयण करी मारग जोवतां रे,
 भूलगो सयल संसार ॥

जैणेनयणे करी मारग जोइये रे,
 नयण ते दीव्य विचार । पंथ० ॥२॥
 पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे,
 अंधोअंध पलाय ।

वस्तु विचारेरे जो आगमेंकरी रे,
 चरण धरण नहीं ठाय ॥ पंथ ॥३॥
 तर्कविचारे रे वाद परंपरा रे,
 पार न पहुंचे कोय ॥

अभिमत वस्तु रे वस्तुगते कहे रे,
 ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥
 वस्तुविचारे रे दीव्य नयणतणो रे,
 विरह पड्यो निरधार ॥

तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,
 चासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥५॥

काललब्धि लही पंथ निहालशु रे,
ए आशा अवलंब ॥

ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे,
आनन्दघन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥

श्रीसभवजिन स्तवन ॥

संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे,
लहि प्रभुसेवन भेद ॥

सेवनकारण पहेली भूमिका रे,
अभय अद्वेष अखेद ॥ संभ० ॥ १ ॥

भय चंचलताहो जे परिणामनी रे,
द्वेष अरोचक भाव ॥

खेद प्रवृत्तिहो करतां थाकीये रे,
दोष अबोध लखाव ॥ सं० ॥ २

चरमावर्त्तहो चरमकरण तथा रे,
भवपरिणति परिपाक ॥

दोष टले वली दृष्टि खुले भली रे,
प्राप्ति प्रवचनवाक ॥ सं० ॥ ३ ॥

परिचय पातक घातक साधुशुं रे,
अकुशल अपचय चेत ॥

ग्रंथअध्यातम श्रवण मनन करी रे,
परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥

कारणजोगेहो कारज नीपजे रे,
एमां कोइ न वाद ॥

पण कारणविण कारज साधिये रे,
ए निजमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥

मुग्ध सुगमकरी सेवन आदरे रे,
सेवन अगम अनूप ॥

देजो कदाचित् सेवकयाचना रे,
 आनंदघन रसरूप सं० ॥ ६ ॥

श्रीअभिनंदनजिन स्तवन ॥

अभिनंदन जिन दरशण तरसिये,
 दरशण दुर्लभ देव ॥

मतमत भेदे रे जो जई पूछीये,
 सह्यु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥

सामान्येकरी दरशण दोहिलूं,
 निरणय सकल विशेष ॥

मदमे वेर्यो रे अंधो किम् करे,
 रविशशि रूपविलेख ॥ अ० ॥ २ ॥

हेतु विवादेहो चित्तधरि जोइये,
 अतिदुरगम नयवाद ॥

आगमवादेहो गुरुगम को नहीं,
 ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥
 घाती डुंगर आडा अतिघणा,
 तुज दरशण जगनाथ ॥
 धीठाईकरी मारग संचरूं,
 सेंगू कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥
 दरशण दरशण रटतो जो फिरूं,
 तो रणरोझ (ज) समान ॥
 जेहने पिपासा हो अमृतपाननी,
 किम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ५ ॥
 तरस न आवेहो मरणजीवनतणो,
 सीजे जो दरशण काज ॥
 दरशण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी,
 आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥ ६ ॥

श्रीसुमतिजिन स्तवन ॥

सुमति चरणकज आतम अरपणा,
 दरपणजिम अविकार । सुग्यानी ॥
 मतितरपण बहु सम्मत जाणिये,
 परिसरपण सुविचार । सुग्यानी
 सु० । १ ।

त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा,
 बहिरातम धुरिभेद । सुग्यानी ।
 बीजो अंतरआतम तीसरो,
 परमातम अविच्छेद सुग्यानी सु० २
 आतमबुद्धेहो कायादिक ग्रह्यो,
 बहिरातम अघरूप । सुग्यानी ।
 कायादिकनोहो साखीधर रह्यो,
 अंतरआतम रूप । सुग्यानी सु० ३

ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो,
 वरजित सकल उपाधि । सुग्यानी
 अतिद्रिय गुणगणमणि आगरू,
 इम परमातम साध सुग्यानि सु० ४

बहिरातम तजी अंतरआतमा,
 रूप थई थिरभाव । सुग्यानी ।
 परमातमनुहो आतमभाववुं,
 आतम अरपण दाव । सुग्यानी सु५

आतमअरपण वस्तु विचारतां,
 भरम टले मतिदोष । सुग्यानी ।
 परमपदारथ संपत्ति संपजे,
 आनंदघन रस पोष । सुग्यानी सु६

श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

पद्मप्रभजिन तुज मुज आंतरुं रे,
किम भांजे भगवंत ॥

करमविपाके कारण जोइने रे,
कोइ कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥

पयई ठिई अणुभाग प्रदेशथी रे
मूल उत्तर बहु भेद ॥

घाती अघाती बंधुदय उदिरणा रे,
सत्ता करमविच्छेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥

कनकोपलवत् पयडि पुरुषतणीरे,
जोडी अनादिस्वभाव ।

अन्यसंजोगी जिहांलगे आतमारे,
संसारी कहेवाय । पद्म० ॥ ३ ॥

कारणजोगेहो बांधे बंधने रे,

कारण मुगति मुकाय ॥

आश्रव संवर नाम अनुक्रमे रे,

हेयोपादेय सुणाय ॥ पद्य० ॥ ४ ॥

गूंजनकरणे अंतर तुज पड्यो रे,

गुणकरणे करी भंग ॥

ग्रंथउक्तकरी पंडितजन कह्यो रे,

अंतरभंग सुअंग ॥ पद्य० ॥ ५ ॥

तुजमुजअंतर अंतर भांजसे रे,

वाजसे मंगल तूर ॥

जीवसरोवर अतिशय बाधसे रे,

आनंदघन रस पूर ॥ पद्य० ॥ ६ ॥

श्रीसुपार्श्वजिन स्तवन ॥

श्रीसुपासजिन वंदिये,
सुखसंपत्तिने हेतु । ललना ॥
शांतसुधारस जलनिधि,
भवसागरमां सेतू । ललना ।

श्रीसुपा० ॥ १ ॥

सात महाभय टालतो
सप्तम जिनवरदेव । ललना ॥
सावधान मनसाकरी,
धारो जिनपद सेव ललना ।

श्रीसुपा०

शिव शंकर जगदीश्वरु,
चिदानंद भगवान । ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थ करु,

ज्योतिसरूप असमान ललना

श्रीसुपा०

अलख निरंजन वच्छलू,

सकलजंतु विसराम । ललना ॥

अभयदान दाता सदा,

पूरण आत्मराम । ललना ।

श्रीसुपा०

वीतराग मद कल्पना,

रतिअरति भयसोग । ललना ॥

निद्रा तंद्रा दुरंदसा,

रहित अबाधितयोग ललना ।

श्रीसुपा०

परमपुरुष परमात्मा,

परमेश्वर परधान । ललना ॥

परमपदारथ परमेष्टि,
परमदेव परमान । ललना ।

श्रीसुपा०

विधि विरंचि विश्वंभरु,
ऋषिकेश जगनाथ । ललना ॥
अघहर अघमोचन धणी ।
मुक्तिपरमपदसाथ । ललना ।

श्रीसुपा०

एम अनेकअभिधा धरे
अनुभवगम्य विचार । ललना ॥
जेह जाणे तेहने करे,
आनंदघन अवतार । ललना

श्रीसुपा०

श्रीचंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

देखणदेरे सखी मुने देखणदे ।
 चंद्रप्रभ मुख चंद । सखी० ।
 उपशम रसनो कंद । सखी०
 गत कलिमल दुखदंद । सखी० ॥१॥
 सुहमनिगोदे न देखिओ । स० ।
 बादर अतिहि विशेष । स०
 पुढवी आउ न लेखियो । स० ।
 तेउ वाउ न लेश । स० । चं० ॥२॥
 वनसपति अतिघणदिहा । स० ।
 दोठो नहीघ दीदार । स० ।
 बि ति चउरिंदी जललिहा । स० ।
 गतिसन्नी पण धार । स० । चं० ३
 सुरितिर निरयनिवासमां । स० ।

मनुज अनारज साथे । स० ।

अपज्जता प्रतिभासमां । स० ।

चतुर न चढीओ हाथ । स० चं ॥४॥

एम अनेक थल जाणिये । स० ।

दरशण धिण जिनदेव । स० ।

आगमथी मत जाणिये । स० ।

कीजे निरमल सेव । स० । चं० ५

निरमल साधु भक्ति लही । स० ।

योग अवंचक होय । स० ।

किरिया अवंचक तिम सही । स० ।

फल अवंचक जोय स० । चं० । ६॥

प्रेरक अवसर जिनवरु । स० ।

मोहनीय क्षय थाय । स० ।

कामित पूरण सुरतरु । स० ।

आनंदघन प्रभु पाय स० । चं ॥ ७ ।

श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

सुविधि जिनेसर पाय नमिने,

शुभकरणी एम कीजेरे ॥

अतिघणो उलट अंग धरीने,

प्रह उठी पूजीजेरे ॥ सुवि० ॥ १ ।

द्रव्यभावसुचि भाव धरिने,

हरखे देहरे जइयेरे ॥

दह तिग पण अहिगम साचवतां,

एकमना धुरि थइयेरे ॥ सु० ॥ २ ।

कुसुम अक्षतवर वाससुगंधो,

धूप दीप मनसाखीरे ॥

अंगपूजा पणभेद सुणी एम,

गुरुमुख आगम भाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

एहनं फल दोष भेद सुणीजे,
अनंतरने परंपररे ॥

आणापालण चित्तप्रसन्नी,
सुगति सुगति सुरमंदिररे सु० ४

फूल अक्षत वरधूप पडवो,
गंध नैवेद्य फल जलभरीरे ॥

अंग अग्र पूजा मिलि अडविध,
भावे भविक शुभगतिवरीरे सु० ५

सत्तरभेद एकवीस प्रकारे,
अष्टोत्तरशत भेदेरे ॥

भावपूजा बहुविध निरधारी,
दोहग दुरगति छेदेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

तुरियभेद पडिवत्तीपूजा,

उपशम खीण सयोगीरे ॥
 चउहापूजा इम उत्तराक्षयणे,
 भोखी केवलभोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥
 एम पूजा बहुभेद सुणीने,
 सुखदायक शुभकरणीरे ॥
 भविकजीव करसे ते लेसे,
 आनंदघनपद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

श्रीशीतलजिन स्तवन ॥
 शीतलजिनपति ललितत्रिभंगी,
 विविधभंगी मनमोहेरे ॥
 करुणा कोमलता तीक्ष्णता,
 उदासीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥

सर्वजंतु हितकरणी करुणा,
कर्मविदारण तीक्ष्णरे ॥

हानादान रहित परिणामि,
उदासीनता विक्ष्णरे ॥ शी० ॥२॥

परदुःखच्छेदन इच्छा करुणा,
तीक्ष्ण परदुःखरीझेरे ॥

उदासीनता उभयविलक्षण,
एकठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥३॥

अभयदान ते मलक्षय करुणा,
तीक्ष्णता गुणभावेरे ॥

प्रेरणविणुकृत उदासीनता,
इमः विरोधमति नावेरे ॥ शी० ॥४॥

शक्ति व्यक्ति त्रिभुवनप्रभुता,
निग्रंथता संयोगेरे ॥

योगी भोगी वक्ता मौनी,
 अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥
 इत्यादिक बहुभंग त्रिभंगी,
 चमतकार चित्तदेतीरे ॥
 अचरिजकारी चित्रविचित्रा,
 आनंदघनपद लेतीरे ॥ शी० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी,
 आत्मरामी नामीरे ॥
 अध्यात्ममत पूरणपामी,
 सहज सुगतीगतिगामीरे ॥
 श्रीश्रे० ॥ १ ॥
 सगलसंसारी इंद्रियरामी,

મુનિગુણ આતમરામીરે ॥
 મુખ્યપણે જે આતમરામી,
 તે કેવલ નિઃકામીરે ॥ શ્રીશ્રે ૧
 નિજસ્વરૂપ જે કિરિયાસાધે,
 તેહ અધ્યાતમ લહિયેરે ॥
 જે કિરિયાકરિ ષડગતિસાધે,
 તે ન અધ્યાતમ કહિયેરે ॥ શ્રીશ્રે ૨
 નામઅધ્યાતમ ઠવણઅધ્યાતમ,
 દ્રવ્યઅધ્યાતમ છંડોરે ॥
 ભાવઅધ્યાતમ નિજગુણસાધે,
 તો તેહસું રહ મંડોરે ॥ શ્રીશ્રે ॥ ૪
 શબ્દઅધ્યાતમ અરથસુળીને,
 નિરવિકલ્પ આદરજોરે ॥
 શબ્દઅધ્યાતમ ભજનાજાળી,

हानग्रहण मति धरजोरे ॥ श्रीश्रे ॥ ५ ॥
 अध्यातम जे वस्तुविचारी,
 बीजा जाण लबासीरे ॥
 वस्तुगते जे वस्तुप्रकासे,
 आनंदघन मतवासीरे ॥ श्रीश्रे ० ॥ ६ ॥

श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

वासुपूज्यजिन त्रिभुवनस्वामी,
 घननामी परनामीरे ॥
 निराकार साकार सचेतन,
 करम करमफल कामीरे ॥ वासु ० ॥ १ ॥
 निराकार अभेद संग्राहक,
 भेदग्राहक साकारोरे ॥
 दर्शनज्ञान दुभेद चेतना,

वस्तुग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥२॥
 कर्ता परिणामि परिणामो,
 कर्म जे जीवे करियेरे ॥
 एक अनेकरूप नयवादे,
 नियते नर अनुसरियेरे ॥ वासु० ॥३॥
 दुःखसुखरूप करमफल जाणो,
 निश्चय एक आनंदोरे ॥
 चेतनता परिणाम न चूके,
 चेतन कहे जिनचंदोरे ॥ वासु० ॥४॥
 परिणामि चेतन परिणामो,
 ज्ञान करमफल भावीरे ॥
 ज्ञानकरमफल चेतन कहिये,
 लेजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५॥
 आत्मज्ञानी श्रमण कहावे,

ઘોજા તો દ્રવ્યલિંગીરે ॥
 વસ્તુગતે જે વસ્તુપ્રકાસે,
 આનંદઘન મતિસંગીરે ॥વાસુ०॥૬॥

શ્રીવિમલજિન સ્તવન ॥

દુઃખદોહગ દુરે ટલ્યારે,
 સુખસંપદસું ભેટ ।
 ધીંગધણી માથે કિયારે
 કુળ ગંજે નરસેટ । વિમલજિન,
 દીઠા લોચણ આજ ।
 મારાં સિદ્ધા વંછિતકાજ ।
 વિમલજિન, દીઠા ० ॥ ૧ ॥
 ચરણકમલ કમલા વસેરે,
 નિરમલ ચિરપદ દેખ ॥

समल अथिरपद परिहरीरे,
पंकज पामर पेख । वि । दी० । २॥

मुजमन तुजपद पंकजरे,
लीनो गुणमकरंद ॥

रंकगणे मंदरधरारे,
हंद चंद नागिंद । वि० । दी० ॥ ३॥

साहिब समरथ तुं धणीरे,
पाभ्यो परम उदार ॥

मनविसरामी बालहोरे,
आत्मचो आधार । वि० । दी० ॥ ४॥

दरशणदीठे जिनतणोरे,
संशय न रहे वेध ॥

दिनकर करभर पसरंतारे,
अंधकार प्रतिषेध । वि० । दी० । ५॥

अमीयभरी मूरति रचीरे,
 उपमा न घटे कोय ॥
 शांतसुधारस झीलतीरे,
 निरखत तृपति न होय वि।दी॥६॥
 एक अरज सेवकतणीरे,
 अवधारो जिनदेव ॥
 कृपाकरो मुज दीजीयेरे,
 आनंदधन पद सेव । वि । दी ॥७॥

श्री अनंतजिन स्तवन ॥
 धार तरवारनी सोहिली दोहिली,
 चउदमा जिनतणी चरणसेवा ॥
 धारपर नाचता देख बाजीगरा,
 सेवना धारपर रहे न देवा धा० ?

एककहे सेविये विविध किरियाकरि,
फल अनेकांत लोचन न देखे ॥

फलअनेकांत किरियाकरी बापडा,
रडवडे चारगतिमांहे लेखे धा० २
गच्छना भेदबहु नयण निहालतां,
तत्त्वनी बात करतां न लाजे ॥

उदरभरणादि निजकाजकरतां थकां
मोह नडिया कलिकालराजे धा० ३
वचननिरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो,
वचनसापेक्ष व्यवहार साचो ॥

वचननिरपेक्ष व्यवहार संसारफल,
सांभली आदरी कांड राचो धा० ४
देवगुरुधर्मनी शुद्धि कहो किम रहे
किम रहे शुद्धश्रदान आणो ॥

शुद्धश्रद्धान विण सर्वकिरियाकरि,
 छारपर लीपणो तेह जाणो धा० ५
 पापनहीं कोइ उ-सूत्रभाषणजिशी,
 धर्मनहीं कोइ जग सूत्रसरिखो ॥
 सूत्रअनुसार जे भविककिरियाकरे
 तेहनो शुद्धचारित्र परिखो धा० ६
 एह उपदेशनो सार संक्षेपथी,
 जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
 ते नरा दीव्य बहुकाल सुख-
 अनुभवी,
 नियत आनंदघनराज पावे धा० ७

श्री धर्मजिन स्तवन ॥

धरमजिनेसर गाउं रंगसुं,

भंग म पडसो हो प्रीत । जिनेसर।
 बीजो मनमंदिर.आणुं नहीं,
 ए अमकुल बट रीत । जि० धर्म ?
 धरमधरमकरतो जग सहु फिरे,
 धरम न जाणे होमर्म । जि० ।
 धरमजिनेसरचरण ग्रह्या पछी,
 कोइ न बांधे होकर्म । जि० । धर्म २
 प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे,
 देखे परमनिधान । जि० ।
 हृदयनयण निहाले जगधणी,
 महिमा मेरुसमान । जि० धर्म० । ३।
 दोडतदोडत दोडत दोडीओ,
 जेती मननी रे दोड । जि० ।
 प्रेमप्रतीत विचारो हूंकडी,

गुरुगम लेजोरे जोड जि० धर्म० । ४।
 एकपखी केम प्रीति वरें पडे,
 उभय मिल्याहोय संधि । जि० ।
 हूं रागी हूं मोहे फंदिओ,
 तुं निरागी निरबंध जि० । धर्म० ५
 परमनिधान प्रगट मुखआगले,
 जगत उलंघी हो जाय । जि० ।
 ज्योतिविना जुओ जगदीशनी,
 अंधोअंध पुलाय । जि० धर्म० ॥ ६॥
 निरमल गुणमणि रोहण भूधरा,
 मुनिजन मानसहंस । जि० ।
 धन्य ते नगरी धन्य वेला घडी,
 मातपिता कुलवंश । जि० धर्म० । ७।
 मन मधुकरवर करजोडी कहे,

पदकंज निकट निवास । जि० ।
 घननामी आनंदघन सांभलो,
 ए सेवक अरदाश । जि० । धर्म० ८

श्री शांतिजिन स्तवन ॥

शांतिजिन एक मुज वीनती,
 सुणो त्रिभुवनराय रे ।
 शांतिसरूप किम जाणिये,
 कहो मन किम परखायरे शांति० १
 धन्य तुं आतम जेहने,
 एहवो प्रश्नअवकाश रे ।
 धीरज मनधरी सांभलो,
 कहुं शांतिप्रतिभासरे । शांति० २
 भाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे,

कह्या श्रीजिनवर देवरे ।
 ते तेम अवितत्थ सहहे,
 प्रथम ए शांतिपद सेवरे । शांति० ३
 आगमधर गुरु समकीति,
 किरिया संवर साररे ।
 संप्रदायी अवंचक सदा,
 सुधी अनुभव आधाररे शांति० ४
 शुद्ध आलंबन आदरे,
 तजी अवर जंजालरे ।
 तामसीवृत्ति सधि परिहरी,
 भजे सात्त्विकी सालरे । शांति० ५
 फलविसंवाद जेमां नही,
 शब्द ते अर्थसंबंधी रे ।
 सकल नयवाद व्यापि रह्यो,

ते शिवसाधन संधीरे शांति० ॥६॥

विधि प्रतिषेधकरी आतमा,
पदारथ अविरोधरे ।

ग्रहणविधि महाजने परिग्रह्यो,
एहवो आगमे बोधरे । शांति० ७

दुष्टजन संगति परिहरी,
भजे सुगुरुसंतान रे ।

जोगसामर्थ्य चित्तभाव जे,
धरे सुगतिनिदान रे शांति० ॥८॥

मानअपमान चित्त समगणे,
समगणे कनक पाषाण रे ।

वंदक निंदक समगणे,

एहवो होय तुं जाण रे । शांति १९.

सर्व जगजंतुने समगणे,
 गणे तृणमणि भाव रे ।
 मुक्तिसंसार बेहु समगणे,
 मुणे भवजलनिधि नाव रे शांति०
 आपणो आत्मभाव जे,
 चेतना एक आधार रे ।
 अवर सविसाथ संयोगथी,
 एह निज परिकर सार रे शांति० ११
 प्रभुसुखथी एम सांभली,
 कहे आत्मराम रे ।
 ताहरे दरशणे निस्तर्षो,
 मुज सिद्धा सवी काम रे शांति० १२
 अहोअहो, हूं मुजने कहूं,

नमो मुज नमो मुज रे ।

अमित फल दानदातारनी,

जेहथी भेटयइ तुज रे शांति० ।१३।

शांतिसरूप संक्षेपथी,

कह्यो निजपररूप ।

आगममांहे विस्तारघणो,

कह्यो शांतिजिन भूप रे शांति० ।१४।

शांतिसरूप एम भावसे,

धरी शुद्ध प्रणिधानरे ।

आनंदघनपद पामसे,

ते लहेसे बहु मान रे शांति० ।१५।

श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

मनहुं किमही न बाझे हो कुंथुजिन

मनहुं किमही न बाझे ।

जिमजिम जतन करीने राखूं,

तिमतिम अलगुं भाजे हो कुं ॥१॥

रजनीवासर वसतीउजड,

गयण पायाले जाय ।

साप खायने मुखहुं थोथुं,

एह ऊखाणो न्यायहो । कुं० ॥२॥

मुगतितणा अभिलाषी तपीया,

ज्ञाननेध्यान अभ्यासे ।

वयरीहुं कांड एहवुं चिंते,

नांखे अवले पासेहो । कुं० ॥ ३ ॥

आगम आगमधरने हाथे,

नावे किणत्रिधि आंकुं, ।
 किहांकणे जो हठकरी हटकुं,
 तो व्यालतणीपरे वांकुंहो कुं० ॥४॥

जो ठग कहंतो ठगतो न देखुं,
 साहुकार पण नाहीं ।
 सर्वमांहेने सहुथी अलगुं,
 ए अचरिज मनमांहींहो । कुं० ॥५॥

जे जे कहंतो कान न धारे,
 आपमते रहे कालो ।
 सुर नर पंडितजन समजावे,
 समजे न माहरो सालोहो कुं० ॥६॥
 में जाण्युं ए लिंग नपुंसक,
 सकल मरदने ठेले ।

बीजीवाते समरथ छे नर,
 एहने कोइ न जेलेहो । कुं० ॥ ७ ॥
 मनसाध्युं तेणे सघलुं साध्युं,
 एह बात नहीं खोटी ।
 एम कहे साध्युं ते नबीमानुं,
 एकही बातछे मोटीहो । कुं० ॥ ८ ॥
 मनहुं दुराराध्य ते वश आण्युं,
 ते आगमथी मतिआणुं ।
 आनंदघनप्रभु माहरुं आणो,
 तो साचुंकरी जाणुंहो । कुं० ॥ ९ ॥

श्रीअरजिन स्तवन ॥

धरम परम अरनाथनो,

किमं जाणुं भगवंतरे ।
 स्वपरसमय समजाविये,
 महिमावंत महंत रे । ध० ॥ १ ॥

शुद्धातम अनुभव सदा,
 स्वसमय एह विलासरे ।
 परबडी छांहडी जेह पडे,
 ते परसमय निवासरे । ध० ॥ २ ॥

तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी,
 ज्योति दिनेश मझाररे ।
 दर्शन ज्ञानचरणथकी,
 शक्ति निजातम धाररे । ध० ॥ ३ ॥

भारी पीलो चीकणो,
 कनक अनेकतरंगरे ।
 पर्यायदृष्टि न दीजीये,

एकज कनक अभंगरे । ध० ॥ ४ ॥

दरशण ज्ञान चरणथकी,

अलख सरूप अनेकरे ।

निरविकल्प रस पीजिये,

शुद्ध निरंजन एकरे । ध० ॥ ५ ॥

परमारथ पंथ जे कहे,

ते रंजे एक तंतरे ।

व्यवहारे लख जे रहे,

तेहना भेद अनंतरे । ध० ॥ ६ ॥

व्यवहारे लखे दोहिला,

कांइ न आवे हाथरे ।

शुद्ध नयथापना सेवतां,

नवी रहे दुविधा साथरे । ध० ॥ ७ ॥

एकपखी लखि प्रीतनीं,

तुमसाथे जगनाथरे ।
 कृपाकरीने राखजो,
 चरणतले ग्रही हाथरे । ध० ॥ ८ ॥
 चक्री धरमतीरथ तणो,
 तीरथ फल तत्त साररे ।
 तीरथ सेवे ते लहे,
 आनंदघन निरधाररे । ध० ॥ ९ ॥

श्रीमल्लिजिन स्तवन ॥

सेवक किम अवगणियेहो,
 मल्लिजिन, ए अब शोभा सारी ।
 अवर जेहने आदर अतिदीये,
 तेहने मूल निवारीहो । मल्लि० । १
 ज्ञानसुरूप अनादि तमारुं,

ते लीधुं तमे ताणी ।

जुओ अज्ञानदशा रीसावी,
जातां काण न आणी हो । मल्लि २

निद्रा सुपन जागर उजागरता,
तुरिय अवस्था आवी ।

निद्रा सुपनदशा रीसाणी,
जाणी न नाथ मनावीहो । मल्लि० ३
समकीत साथे सगाइ कीधी,
सपरिवारसुं गाढी ।

मिथ्यामति अपराधण जाणी,
घरथी बाहिर काढीहो । मल्लि० ४
हास्य अरति रति शोक दुगंछा,
भय पामर करसाली ।

नोकषाय श्रेणीगज चढतां,

श्वानतणी गति झालीहो । मल्लि० ५
 रागद्वेष अविरतिनी परिणति,
 चरणमोहना योधा ।

चीतराग परिणति परणमतां,
 उठी नाठा बोधाहो । मल्लि० ॥६॥
 वेदोदय कामा परिणामा,
 काम्यकर सह्य त्यागी ।

निष्कामी करुणासागर,
 अनंत चतुष्कपद पागीहो । मल्लि० ७
 दानविघन घारी सह्य जनने,
 अभयदान पद दाता ।

लाभविघन जगविघन निवारक,
 परम लाभ रसमाताहो । मल्लि० ८
 वीर्यविघन पंडितवीर्य हणी,

પૂરણપદ્ધતી યોગી ।

ભોગોપભોગ દોષવિઘન નિવારી,
પૂરણભોગ સુભોગીહો । મલ્હિ ૦ ॥૧॥

એ અઢારદૂષણ વરજિત તનુ,
મુનિજનઘૂંદે ગાયા ।

અવિરતિરૂપક દોષનિરૂપણ,
નિરદૂષણ મન ભાયાહો મલ્હિ ૦ ૧૦

ઈણવિધ પરચી મનવિસરામી,
જિનવર ગુણ જે ગાવે ।

દીનબંધુની મહેર નજરથી,
આનંદઘનપદ પાવેહો । મલ્હિ ૦ ૧૧

શ્રીમુનિસુવ્રતજિન સ્તવન ॥

મુનિસુવ્રતજિનરાય એક મુજબીનતિ

निसुणो ।

आतमतस्व क्युं जाण्युं जगतगुरु,
एह विचार मुजकहियो ।

आतमतस्व जाण्याविण निरमल,
चित्तसमाधि नधिलहियो । मु० ?

कोइ अबंध आतमतत्त माने,
किरिया करतो दीसे ।

क्रियातणुफल कहो कुणभोगवे,
इमपूछ्युं चित्तरीसे । मु० ॥ २ ॥

जडचेतन ए आतम एकज,
थावरजंगम सरिखो ।

दुःखसुख शंकर दूषण आवे,
चित्तविचारी जो परिखो मु० ॥ ३ ॥
एककहे नित्यज आतमतत्त,

आतम दरशण लीनो ।

कृतविनाश अकृतागमदूषण,
नवीदेखे मतहीनो । मु० ॥ ४ ॥

सुगतिमतिरागी कहे वादी,
क्षणिक ए आतम जाणो ।

बंधमोक्ष सुखदुख न घटे,
एह विचार मनआणो । मु० ॥ ५ ॥

भूतचतुष्क वरजित आतमतत्त,
सत्ता अलगी न घटे ।

अंध शकट जो नजर न देखे,
तो शुं कीर्जे शकटे । मु० ॥ ६ ॥

एम अनेक वादी मतविभ्रम,
संकट पडियो न लहे ।

चित्तसमाधि ते माटे पुछुं,

तुमविण तत्त कोइ न कहे । मु० ७

बलतुं जगगुरु इणिपरे भाषे,

पक्षपात सबछंडी ।

राग द्वेष मोहपख वर्जित,

आतमसुं रढ मंडी । मु० ॥ ८ ॥

आतमध्यान करे जो कोउ,

सो फिरइणमें नावे ।

वागजाल बीजुं सहजुजाणे,

एह तख चित्त चाव । मु० ॥ ९ ॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहिये,

ते तत्तज्ञानी कहिये ।

श्रीमुनिसुव्रत कृपाकरो तो,

आनंदघनपद लहिये । मु० ॥ १० ॥

શ્રીનમિજિન સ્તવન ॥

ષટ્દરસણ જિનઅંગ મળીજે,

ન્યાસષઢંગ જો સાધેરે ।

નમિજિનવરના ચરણઉપાસક,

ષટ્દરશન આરાધેરે । ષટ્ ॥ ૧ ॥

જિનસુરપાદપ પાચ વચ્ચાણું,

સાંખ્યજોગ દોય મેદેરે ।

આતમસત્તા વિવરણકરતા,

લહો દુગઅંગ અચ્છેદેરે । ષટ્ ॥ ૨ ॥

મેદઅમેદ સુગતમીમાંસક,

જિનવર દોય કરભારીરે ।

લોકાલોક અવલંબન મજિયે,

ગુરુગમથી અવધારીરે । ષટ્ ॥ ૩ ॥

लोकायतिक कूख जिनवरनी,
अंशविचारी जो कीजेरे ।

तत्त्वविचार सुधारस धारा,
गुरुगमविण किम पीजेरे।षट० ॥४॥
जैन जिनेश्वर वर उत्तमअंग,
अंतरंग बहिरंगेरे ।

अक्षरन्यास धरा आधारक,
आराधे धरीसंगेरे । षट० ॥ ५ ॥

जिनवरमां सघला दरशण छे,
दर्शने जिनवरभजनारे ।

सागरमां सघली तटिनी सही,
तटिनीमां सागरभजनारे।षट० ॥६॥

जिनस्वरूप थइ जिन आराधे,
ते सही जिनवर होवेरे ।

ભૂંગી ફૂલીકાને ચટકાવે
 તે ભૂંગી જગજોવેરે । ષટ ॥ ૭ ॥
 ચૂરણિ ભાષ્ય સૂત્ર નિર્યુક્તિ,
 ષ્ટિ પરંપરા અનુભવરે ।
 સમયપુરુષના અંગ કહ્યાએ,
 જે છેદે તે દુરભવરે । ષટ૦ ॥ ૮ ॥
 મુદ્રા બીજધારણા અક્ષર,
 ન્યાસ અરથ વિનિયોગેરે ।
 જે ધ્યાવે તે નવિ વંચીજે,
 ક્રિયા અવંચક ભોગેરે । ષટ૦ ૯॥
 શ્રુતઅનુસાર વિચારી બોલું,
 સુગુરુ તથાવિધ ન મિલેરે ।
 કિરિયાકરી નવિ સાધિ સકીયે,
 એ વિષવાદ ચિત્ત સઘલેરે । ષટ૦ ૧૦

ते माटे उभा करजोडी,
 जिनवर आगल कहीयेरे ।
 समय चरणसेवा शुद्ध देजो,
 जिम आनंदघन लहीयेरे।षट०॥११।

श्रीनेमिनाथजिन स्तवन॥

अष्ट भवांतर वालही रे,
 तुं मुज आतमराम । मनरावाला ।
 मुगतिस्त्रीसुं आपणेरे,
 सगपण कोइ न काम । म० ॥१॥
 घरआबो हो वालम घरआबो,
 मारी आशाना विशराम । म० ।
 रथफेरो हो साजन रथफेरो,
 साजन मारा मनोरथ साथ ।म०।२।

नारीपखो स्यो नेहलो रे,
 साच कहे जग नाथ । म० ।
 ईश्वर अरधंगे धरीरे,
 तुं मुज झाले न हाथ । म० ॥ ३ ॥
 पशुजननी करुणा करीरे,
 आणीहृदय विचार ॥ म० ॥
 माणसनी करुणा नहीरे,
 ए कुण घर आचार । म० ॥ ४ ॥
 प्रेम कल्पतरु छेदीयोरे,
 धरियो जोग धतूर । म० ।
 चतुराशरो कुण कहोरे,
 गुरु मिलियो जग सूर । म० ॥ ५ ॥
 मास्तो एमां क्युं ही नहीरे,
 आप विचारो राज । म० ।

राजसभामें बेसतारें,
 किसडी बधसी लाज । म० ॥ ६ ॥
 प्रेमकरे जग जनसहुरे,
 निरवाहे ते ओर । म० ।
 प्रीतकरीने छोडी देरे,
 तेसुं न चाले जोर । म० ॥ ७ ॥
 जो मनमां एहवुं हतुंरे,
 निसपत करत न जाण । म० ।
 निसपतकरीने छांडतारें,
 माणस हुये नुकसाण । म० ॥ ८ ॥
 देतां दान संवत्सरीरे,
 सहु लहे वंछितपोष । म० ।
 सेवक वंछित नबी लहेरे,
 ते सेवकनो दोष । मन० ॥ ९ ॥

सखी कहे ए सामलो रे,

हुं कहुं लक्षण सेत । म० ।

इण लक्षण साची सखीरे,

भाप विचारो हेत । म० ॥ १० ॥

रागीसुं रागी सहुरे,

वैरागी स्यो राग । म० ।

रागधिना किम दाखवोरे,

मुगतिसुंदरी माग । म० ॥ ११ ॥

एकगुह्य घटतुं नथीरे,

सघलोई जाणे लोक । म० ।

अनेकांतिक भोगवोरे,

ब्रह्मचारी गतरोग । म० ॥ १२ ॥

जिण जोणी तुमने जोउंरे,

तिण जोणी जुओ राज । म० ।

एकवार मुजने जुओरे,
 तो सीझे मुज काज । म० ॥ १३ ॥
 मोहदशा धरी भावनारे,
 चित्त लहे तत्त्वविचार । म० ।
 धीतरागता आदरीरे,
 प्राणनाथ निरधार । म० ॥ १४ ॥
 सेवक पण ते आदरेरे,
 तो रहे सेवक माम । म० ।
 आशयसाथे चालीयेरे,
 एहीज रुडूं काम । म० ॥ १५ ॥
 त्रिविधयोग धरी आदर्योरे,
 नेभिनाथ भरतार । म० ।
 धारण पोषण तारणोरे,
 नव रस मुगताहार । म० ॥ १६ ॥

कारणरूपी प्रभु भज्योरे,
 गण्यो न काज अकाज । म० ।
 कृपाकरी मुजदीजीयेरे,
 आनंदधनपद राज । म० ॥ १७ ॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

ध्रुवपदरामी होस्वामिमाहरा,
 निकामी गुणराय । सुग्यानी ।
 निजगुणकामी होपामी तुं धणी,
 ध्रुव आरामी हो थाय । सु० ध्रु० १
 सर्वव्यापी कहे सर्वजाणग पणे,
 पर परिणमन सरूप । सु० ।
 पररूपेकरी तत्त्वपणुं नहीं,
 स्वसत्ता चिदरूप । सु० । ध्रु० ॥ २ ॥

ज्ञेयअनेके होज्ञान अनेकता,
 जलभाजन रवि जेम । सु० ।
 द्रव्यएकत्वपणे गुणएकता,
 निजपद रमता होखेम । सु० ध्रु ॥३॥
 परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे,
 परक्षेत्रे थयुं ज्ञान । सु० ।
 अस्तिपणुं निजक्षेत्रे तुमे कह्युं,
 निर्मलता गुणमान । सु० । ध्रु ॥५॥
 ज्ञेयविनाशो होज्ञान विनिश्वरु,
 काप्रमाणेरे थाय । सु० ।
 स्वकालेकरी स्वसत्ता सदा,
 ते पररीते न जाय । सु० । ध्रु ॥५॥
 परभावेकरी परता पामता,
 स्वसत्ता थिरठाण ॥ सु० ।

आ०मचतुष्कमयी परमां नही,
 तो किम सहुनो रे जाण ।सु०धु०॥६॥
 अगुरुलघु निजगुणने देखतां,
 द्रव्य सकल देखंत । सु० ।
 साधारण गुणनी साधर्म्यता,
 दर्पण जल दृष्टांत सु० । धु०॥७॥
 श्रीपारसजिन पारसरस समो,
 पण इहां पारस नाहिं । सु० ।
 पूरणरसीओ होनिजगुण परसनो,
 आनंदघन मुज मांहि ।सु०॥धु०॥८॥
 पासजिन ताहरा रूपनुं,
 मुज प्रतिभास किम होयरे ।
 तुज मुजसत्ता एकता,
 अचल विमल अकल जोयरे । पा० १

मुज प्रवचन पक्षथी,
 निश्चय भेद न कोयरे ।
 व्यवहारे लखि देखीये,
 भेद प्रतिभेद बहु लोयरे पास० ॥२॥
 बंधनमोख नहीं निश्चये,
 व्यवहारे भज दोयरे ।
 अखंडित अबाधित सोय कदा,
 नित अबाधित सोयरे । पास० ॥३॥
 अन्वय हेतु व्यतिरेकथी,
 अंतरो तुज मुज रूपरे ।
 अंतर मेटवा कारणे,
 आत्मस्वरूप अनूपरे । पास० ॥४॥
 आत्मता परमात्मता,
 शुद्ध नय भेद न एकरे ।

अवर आरोपित धर्मछे.

तेहना भेद अनेकरे । पास० ॥ ५ ॥

धरमो धरमथी एकता,

तेह मुज रूप अभेदरे ।

एकसत्ता लख एकता,

कहे ते मूढमति खेदरे । पास० ॥ ६ ॥

आत्मधरम अनुसरी,

रमे जे आत्मरामरे ।

आनंदघन पदवी लहे,

परम आत्म तस नामरे पास० ॥ ७ ॥

श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

वीरजिनेश्वर चरणे लागुं,

वीरपणुं ते मागुंरे ।

मिथ्या मोह तिमिर भयभाग्युं,
जित नगरुं वाग्यु । वी० ॥ १ ॥

छुडमथ्य वीरय लेहपासंगे,
अभिसंधिज मति अंगेरे ।

सुक्षम थूलक्रियाने रंगे,
योगी थयो उमंगेरे । वी० ॥ २ ॥

असंख्यप्रदेशे वीर्यअसंखे,
योग असखित कंखेरे ।

पुद्गलगण तेणे ले सुविशेषे,
यथाशक्ति मति लेखेरे । वी० ॥ ३ ॥

उत्कृष्टे वीरयने वेसे,
योगक्रिया नवी पेसेरे ।

योगतणी ध्रुवताने तेसे

आत्मशक्ति न खेसेरे । वी० ॥४॥
 काम वीर्यवशे जिम भोगी,
 तिम आत्म थयो भोगीरे ।
 सूरपणे आत्म उपयोगी,
 थाय तेहने अयोगीरे । वी० ॥ ५ ॥
 वीरपणुंते आत्मठाणे,
 जाण्युं तुमची वाणेरे ।
 ध्यानविनाणे शक्तिप्रमाणे,
 निज ध्रुवपद पहिचाणेरे । वी० ॥६॥
 आलंबन साधन जे त्यागे,
 पर परिणतिने भागेरे ।
 अक्षयदर्शन ज्ञानवैरागे,
 आनंदघन प्रभु जागेरे । वी० ॥ ७ ॥

चरम जिणेसर विगत स्वरूपनुरे,
भावुं केम सरूप ।

साकारी विण ध्यान न संभवेरे,
ए अविचार अरूप । चरम० ॥ १ ॥

आप सरूपे आत्ममां रमेरे.

तेहना धुर बे भेद ।

असंख उक्कोसे साकारी पदेरे,
निराकारी निरभेद । चरम० ॥ २ ॥

सूखम नाम करम निराकारजेरे.

तेह भेदे नहीं अंत ।

निराकारजे निरगतकर्मथीरे,
तेह अभेद अनंत । चरम० ॥ ३ ॥

रूपनहीं कह्ये बंधन घटयुरे,

बंध न मोक्ष न कोय ।

बंधमोखविण सादिअनंतनुरे,

भंगसंग किम होय । चरम० ॥ ४ ॥

द्रव्यविना तिम सत्ता नवी लहेरे,

सत्ताविण स्यो रूप ।

रूपविना किम सिद्धअनंततारे,

भावुं अकलसरूप । चरम० ॥ ५ ॥

आत्मता परिणति जे परिणम्यारे,

ते मुज भेदाभेद ।

तदाकारविण मारा रूपनुरे,

ध्यावुं विध प्रतिषेध । चरम० ॥ ६ ॥

अंतिम भवगहणे तुज भावनुरे,

भावसुं शुद्धसरूप ।

तइये आनंदघनपद पामसुंरे,
आतमरूप अनूप । चरम० ॥ ७ ॥

तत्--ॐ--सत्.

श्रीपद् आनंदघनजीकृत स्तवनो.

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीजीनुं स्तवन

प्रणमुं पद पंकज पार्श्वना, जस वा-
सना अगम अनूपरे, मोह्यो मन
मधुकर जेहथी पामे निज शुद्ध
स्वरूपरे. प्रणमु० ? पंक कलंक शं-
का नहि, नहीं खेदादिक दुःख दो-
षरे; त्रिविध अवंचक जोगथी, ल-
हे अध्यात्म सुख पोषरे. प्रणमुं०
२ दूरंदशा दूरे टळे, भजे मुदिता

मैत्रि भावरे; वरते नित्य चित्त
 मध्यस्थता, करुणामय शुद्ध स्वभा-
 वरे. प्रणमुं० ३ निज स्वभाव स्थिर
 कर धरे, न करे पुद्गलनी खंचरे
 साखी हुइ वरते सदा, न कदा प-
 रभाव प्रपंचरे. प्रणमुं० ४ सहज
 दशा निश्चय जगे, उत्तम अनुभव
 रसरंगरे, राचे नही परभावसुं,
 निज भावसुं रंग अभंगरे. प्रणमुं
 ५ निजगुण सब निजमां लखे,
 न चखे परगुणनी रेखरे, खीर नीर-
 विवरो करे, ए अनुभव हंस सुपे-
 खरे. प्रणमुं० ६ निर्विकल्प ध्येय
 अनुभवे अनुभव अनुभवनी प्रीत-

, ओरन कबहुं लखी शके आनं-
द घन प्रित प्रतीत रे. प्रणमुं० ७

ॐ

श्री. वीर स्वामीजीनुं स्तवन.

वीर जिनेश्वर परमेश्वर जयो, ज-
गजीवन जिनभूष, अनुभव मिते-
रे चित्ते हित करी, दाख्युं तास स्व-
रूप. वीर० १ जेह अगोचर मान-
स वचनने, तेह अतीन्द्रिय रूप; अ-
नुभव मित्तेरे व्यक्ति शक्तिसुं, भा-
ख्युं तास स्वरूप. वीर० २ नय
निक्षेपे जे न जाणीये, नवि जीहां
प्रसरे प्रमाण; शुद्ध स्वरूपेरे ते ब्रह्म

दाखवे, केवळ अनुभव भाण. वी-
 र० ३ अगम अगोचर अनुपम अर्थ
 नो, कोण करी जाणेरे भेद; सहज
 विशुद्धेरे अनुभव वयण जे, शास्त्र
 ते सघळा रे खेद. वीर ४ दिशी दे-
 खाडी रे शास्त्र सवी रहे, न लहे
 अगोचर वात; कारज साधक बा-
 धक रहित जे, अनुभव मित्त वि-
 रूपात. वीर० ५ अहो चतुराई रे
 अनुभव मित्तनी, अहो तस प्रीत
 प्रतीत. अंतरजामी स्वामी समीप
 ते, राखी मित्र सुं रीत. वीर० ६
 अनुभव संगेरे रंगे प्रभु मल्या, स-
 फळ फळया सविकाज; निजपद

संपद जे ते अनुभवे, आनंदघन
महाराज. वीर० ७

अन्तिमजो दो स्तवन
(“ प्रणमं पदपंकज पार्श्वना ”
और “ वीरजिनेश्वर परमेश्वर
जयो ”) हे सो खुद आनंदघनजी
महाराजके बनाये हुए प्राचीन
भंडारोसे मिलजानेसे सम्मिलित
कियेहे

॥ इति आनन्दघनजी कृत ॥

॥ चौवीशी समाप्त ॥

सुखसागरज्ञानबिन्दु नं १३

श्री देवचंद्रजी कृत चौविशी

श्री ऋषभनाथ जिन स्तवन. ॥

(निद्रडी वेरण हुइ रहीरे-ए देशी.)

ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी ।

क्रीम कीजे हो कहो चतुर विचार

प्रभुजी जइ अलगा बस्या ।

तिहां किणें नवि हो कोइ बचन

उच्चार ऋषभ० ॥ १ ॥

कागळ पण पहोंचे नहीं ।

नवि पहोंचे हो तिहां को परधान

जे पहोंचे ते तुम समो ।

नवि भाँखेहो कोईनुंद्यवधान॥ॠ०२॥

प्रीति करे ते रागीया ।

जिनवरजी हो तुमे तां वीतराग ॥

प्रीतडी जेह अरागीथी ।

मेलववीते लोकोत्तरमाग॥ॠ०३॥

प्रीति अनादिनी विष भरी ।

ते रीते हो करवा मुज भाव ॥

करवी निर्विष प्रीतडी ।

किण भांते हो कहो बने बनाव ॠ०४

प्रीति अनंती परथकी ।
 जे तोडे हो ते जोडे एह ॥
 परम पुरुषथी रागता ।
 एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥३५
 प्रभुजीने अवलंबतां ।
 निज प्रभुता हो प्रगटे गुणराश ॥
 देवचंद्रनी सेवना ।
 आपे मुझ हो अविचल सुखवास ६

॥ अजित जिन स्तवन ॥

[देखो गति दैवनीरे—ए देशी.]

ज्ञानादिक गुण संपदारे ।
 तुझ अनंत अपार ॥

ते सांभळतां उपनोरे ।

रुचि तेणे पार उतार ॥

अजित जिन तारजोरे ।

तारजो दीनदयाल-अजितजिन

तारजोरे. ॥ १ ॥

जे जे कारण जेहनुरे ।

सामग्री संयोग ।

मिलतां कारज निपजेरे ।

करता तणे प्रयोग ॥ अजित० २ ॥

कार्य सिद्धि करता वसुरे ।

लहि कारण संयोग ॥

निज पद कारक प्रभु मल्यारे ।

होए निमित्तह भोग ॥ अजित० ३

अज कुलगत केसरी लहेरे ।

निज पद सिंह निहाल ॥

तिम प्रभु भक्ते भवि लहेरे ।

आत्म शक्ति संभाल ॥ अजित ४

कारण पद कर्त्तापणेरे ।

करी आरोप अभेद ॥

निजपद अर्थी प्रभु थकीरे ।

करे अनेक उमेद ॥ अजित० ॥ ५ ॥

एहवा परमात्म प्रभुरे ।

परमानंद स्वरूप ॥

स्याद्वाद सत्ता रसीरे ।

अमल अखंड अनूप ॥ अजित० ६

आरोपित सुख भ्रम दलयोरे ।

भास्यो अध्यावाध ॥

समर्थुं अभिलाषीपणुंरे ।

कर्त्ता साधन साध्य ॥ अजित० ७

प्राहकता स्वामीत्वतारे ।

व्यापक भोक्ता भाव ॥

कारणता कारज दशारे ।

सकल ग्रह्यं निज भाव ॥ अ० ८।

श्रद्धा भासन रमणतारे ।

दानादिक परिणाम ॥

सकल थया सत्ता रसीरे ।

जिनवर दरिद्राण पाम ॥ अजित० ९

तेणे निर्यामक माहणारे ।

वैद्य गोप आधार ॥

देवचंद्र सुख सागरारे ।

भाव धर्म दातार ॥ अजित० १० ॥

॥ श्री संभव जिन स्तवन ॥

(धणरा ढोला-ए देशी.)

श्री संभव जिन राजजीरे ।

ताहरुं अकल स्वरूप ॥ जिनवर पूजो ॥

स्वपरप्रकाशक दिनमणीरे ।

समता रसनो भूप ॥ जि० १ ॥

पूजो पूजोरे भविक जिन पुजो ।

हांरे प्रभु पूज्यां परमानंद ॥ जि० ८ ॥ टेक

अविसंवाद निमित्त छोरे ।

जगत जंतु सुखकाज ॥ जि० ॥

हेतु सत्य बहु मानथीरे ।

जिन सेव्या शिवराज ॥ जि० २ ॥

उपादान आत्म सहीरे ।

पुष्टालंबन देव । जि० ॥

उपादान कारणपणेरे ।

प्रगट करे प्रभु सेव ॥ जि० ३ ॥

कार्य गुण कारणपणेरे ।

कारण कार्य अनूप ॥ जि० ॥

सकल सिद्धता ताहरीरे ।

माहारे साधन रूप ॥ जि० ४ ॥

एकवार प्रभु चंदनारे ।

आगम रीते थाय ॥ जि० ॥

कारण सत्ते कार्यनीरे ।

सिद्धि प्रतीत कराय ॥ जि० ५ ॥

प्रभु पणे प्रभु ओलखी ।

अमल चिमल गुण गेह ॥ जि० ॥

साध्य दृष्टि साधकपणेरे ।

चंदे धन्य नर तेह ॥ जि० ६ ॥

जन्म कृतारथ तेहनोरे ।

दिखस संफल पण तास ॥ जि० ॥

जगत शरण जिन चरणनेरे ।

चंदे धरीय उल्लास जि० ॥ ७ ॥

निज सत्ता निज भावथीरे ।

गुण अनंतनो ठाण ॥ जि० ॥

देवचंद्र जिनराजजीरे ।

शुद्ध सिद्ध सुख खाण ॥ जि० ८ ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

[ब्रह्मचर्य पद पूजिए—ए देशी.]

कयुं जाणुं कयुं बनी आवशे ।

अभिनंदन रस रीत हो मित्त ॥

पुद्गल अनुभव त्यागथी ।

करवी जसु परतीत हो मित्त ॥ कयुं

परमात्म परमेसरु ।

वस्तुगते ते अलिप्त हो मित्त ॥

द्रव्ये द्रव्य मले नहिं ।

भावे ते अन्य अव्याप्त हो मित्त

॥ क्यु. २ ॥

शुद्ध स्वरूप सनातनो ।

निर्मल जे निस्संग हो मित्त ॥

आत्म विमूति परिणम्यो ।

न करे ते परसंग हो मित्त क्यु. ३॥

पण जाणुं आगम बलें ।

मिलवुं तुम प्रभु साथ हो मित्त ॥

प्रभु तो स्वसंपत्तिमयी ।

शुद्ध स्वरूपनो नाथ हो मित्त

॥ क्यु. ४ ॥

परपरिणामिकता अछे ।

जे तुज पुद्गल योग हो मित्त ॥

जडचल जगनि एठनो ।

न घटे तुजने भोग हो मित्त क्युं ६ ॥

शुद्ध निमिती प्रभु ग्रह्या ।

करी अशुद्ध परहेय हो मित्त ॥

आत्मालंबी गुण लही ।

सहु साधकनो ध्येय हो मित्त क्युं. ६

जिम जिनघर आलंचने ।

वधे सधे एक तान हो मित्त ॥

तेम तेम आत्मालंबनी ।

ग्रहे स्वरूप निदान हो मित्त क्युं. ७॥

स्व स्वरूप एकत्वता ।

साधे पूर्णानंद हो मित्त ॥

रमे भोगवे आत्मा ।

रत्नत्रयी गुण वृंद हो मित्त

॥ क्युं० ८ ॥

अभिनंदन अवलंबने ।

परमानंद विलास हो मित्त ॥

देवचंद्र प्रभु सेवना ।

करी अनुभव अभ्यास हो मित्त

॥ क्युं० ९ ॥

॥ श्री सुमति जिन स्तवन ॥

(कडखानी देशी)

अहो श्री सुमतिजिन शुद्धता ताहरी

स्वगुण पर्याय परिणाम रामी ॥

नित्यता एकता अस्तिता इतर युत ।

भोग्य भोगी थको प्रभु अकामी

॥ अहो० १ ॥

ऊपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे
गुण प्रमुख बहुलता तहवि पिंडी ॥
आत्म भावे रहे अपरता नवि ग्रहे
लोक परदेश मित पण अखंडी ॥

॥ अहो० २ ॥

कार्य कारणपणे प्रणमे तहवि ध्रुव ।
कार्य भेदे करे पण अभेदी ।
कर्तृता परिणमे नव्यता नवि रमे ।
सकल वेत्ता थको पण अवेदी अ०३
शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता ।
सहज निज भाव भोगी अयोगी ॥

स्वपर उपयोगी तादात्म्य सत्तारसी
 शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ अ० ४
 वस्तु निज परिणते सब
 परिणामिकी ।

एटले कोई प्रभुता न पामे ॥
 करे जाणे रमे अनुभवे ते प्रभु ।
 तत्त्व स्वामित्व सुचितत्त्व धामे

॥ अ० ५ ॥

जीव नवि पुगगलो नैव पुगगल कदा
 पुगगलाधार नहीं तास रंगी ।
 परतणो ईश नही अपर ऐश्वर्यता ।
 वस्तु धर्म कदा न परसंगी ॥ अ० ६
 संग्रहे नहीं आपे नहीं परभणी ।

नवि करे आदरे न पर राखे ।

शुद्ध स्याद्वाद निज भाव

भोगी जिके ।

तेह परभावने केम चाखे । अ० ७११

ताहरी शुद्धता भास आश्चर्यथी ।

ऊपजे रुचि तेणे तत्व ईहे ॥

तत्वरंगी थयो दोषथी उभग्यो ।

दोष त्यागी ढले तत्व लीहे अ० ८

शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य साधन

सध्यो ।

स्वामि प्रतिछंदे सत्ता आराधे ॥

आत्म निष्पत्ति तिहां साधना

नवि टके ।

वस्तु उत्सर्ग आत्म-समाधे अ० ९

माहरी शुद्ध सत्ता तणी पूर्णता ।
 तेहनो हेतु प्रभु तुंही साचो ॥
 देवचंद्रे स्तव्यो मुनिगणे अनुभव्यो
 तत्व भक्ते भविक सकल राच्यो
 ॥ अ० १० ॥

॥ श्री पद्म प्रभु जिन स्तवन ॥

(हुं तुज आगल शी कहूं केशरिया
 लाल)

श्री पद्मप्रभु जिन गुण निधिरे लाल
 जग तारक जगदीशरे वालेसर ॥
 जिन उपकार थकी लहेरे लाल ।
 भविजन सिद्धि जगीशरे वा० १ ॥

तुज दरिशाण मुज बालहोरे लाल
 दरिशाण शुद्ध पवित्तरे वा. ॥
 दरशाण शब्द नये करेरे लाल ।
 संग्रह एवम्भूतरे ॥ वा० तु० २ ॥
 बीजे वृक्ष अनंततारे लाल ।
 पसरे भूजल योगरे ॥ वा० ॥
 तिम मुज आतम संपदारे लाल
 प्रगटे प्रभु संयोगरे वा० तु० ३ ॥
 जगत जंतु कारज रुचिरे लाल ।
 साधे उदये भाणरे ॥ वा. ॥
 चिदानंद सुविलासतारे लाल ।
 बाधे जिनवर झाणरे ॥ वा० तु० ४
 लब्धि सिद्ध मंत्राक्षरेरे लाल ।

उपजे साधक संगरे ॥ वा० ।
 सहज अध्यात्म तत्त्वतारे लाल ।
 प्रगटे तत्त्वी रंगरे ॥ वा० तु० ५ ॥
 लोह धातु कांचन हुवेरे लाल ।
 पारस फरसन पामीरे ॥ वा० ॥
 प्रगटे अध्यात्म दशारे लाल ।
 व्यक्त गुणी गुण ग्रामरे वा० तु० ६
 आत्म सिद्धि कारज भणीरे लाल
 सहज निर्यामक हेतुरे ॥ वा० ॥
 नामादिक जिन राजनारे लाल ।
 भवसागर मांहे सेतुरे वा० तु० ७
 स्थंभन इंद्रिय योगनारे लाल ।
 रक्त वर्ण गुणरायरे ॥ वा० ॥

देवचंद्र घृंदे स्तव्योरे लाल ।

आप अवर्ण अकायरे वा० तु० ८ ॥

॥ श्री सुपार्श्व जिन स्तवन ॥

[हो सुंदर तपसरिखो जग कोइ नहीं]

श्री सुपास आनंदमे ।

गुण अनंतनो कंद हो ॥ जिनजी ॥

ज्ञानानंदे पूरणो ।

पवित्र चारित्र्यानंद हो जि० श्री ?

संरक्षण विण नाथ छो ।

द्रव्य विना धनवंत हो ॥ जि० ॥

कर्त्ता पद किरिया विना ॥

संत अजेय अनंत हो जि० श्री २

अगम अगोचर अमर तुं ।
 अन्वय ऋद्धि समूह हो ॥ जि० ॥
 वर्ण गंध रस फरस विष्णु ।
 निज भोक्ता गुण व्युह हो जिथी ३
 अक्षय दान अचितना ।
 लाभ अयत्ने भोग हो ॥ जि० ॥
 वीर्य शक्ति अपयासता ।
 शुद्ध स्वगुण उपभोग हो जिथी४॥
 एकांतिक आत्यंतिको ।
 सहज अकृत स्वाधीन हो ॥ जि० ॥
 निरुपचरित निर्द्वंद सुख ।
 अन्य अहेतुक पीन हो ॥ जि० श्री५
 एक प्रदेशो ताहरे ।

अव्याबाध समाय हो ॥ जि० ॥

तसु पर्याय अविभागता ।

सर्वाकाश न माय हो जि० श्री ६

एम अनंत गुणनो धणी ।

गुण गुणनो आनन्द हो ॥ जि० ॥

भोग रमण आस्वाद युत ।

प्रभु तुं परमानंद हो जि० श्री ७ ॥

अव्याबाध रुचि थइ ।

साधे अव्याबाध हो जि० ॥

देवचंद्र पद ते लहे ।

परमानंद समाध हो । जि० श्री ८ ।

॥ શ્રી ચંદ્રપ્રભ જિન સ્તવન ॥

(શ્રી શ્રેયાંસ જિન અંતરજામી)

શ્રી ચંદ્રપ્રભ જિન પદ સેવા ।

હેવાયે જે હલિયાજી ॥

આતમગુણ અનુભવથી મઢિયા !

તે ભવ ભયથી ટલિયાજી શ્રી૦ ?

દ્રવ્ય સેવ વંદન નમનાદિક ।

અર્ચન ઘલિ ગુણ ગ્રામોજી ॥

ભાવ અભેદ થાવાની રૂઠા ।

પરભાવે નિઃકામોજી ॥ શ્રી૦ ૨ ॥

ભાવ સેવ અપઘાદે નૈગમ ।

પ્રભુ ગુણને સંકલ્પેજી ॥

સંગ્રહ સત્તા તુલ્યા રોપે ।

भेदां भेद विकल्पेजी ॥ श्री० ३ ॥
 व्यवहारे बहु मान ज्ञान निज ।
 चरणे जिन गुण रमणाजी ॥
 प्रभु गुण आलंबी परिणामे ।
 ऋजु पद ध्यान स्मरणाजी श्री० ४
 शब्दे शुक्ल ध्यानारोहण ।
 समभिरुढ गुण दशमेजी ॥
 बीय शुक्ल अविकल्प एकत्वे ।
 एवंभूत ते अममेजी ॥ श्री० ५ ॥
 उत्सर्गं समकित गुण प्रगट्यो ।
 मैगम प्रभुता अंशेजी ॥
 संग्रह आत्म सत्तालंबी ।
 मुनि पद भाव प्रशंसेजी श्री० ६ ॥

ऋजु सूत्रे जे श्रेणि पदस्थे ।
 आत्म शक्ति प्रकासेजी ॥
 यथाख्यात पद शब्द स्वरूपे ।
 शुद्ध धर्म उल्लासेजी ॥ श्री० ७ ॥
 भाव सयोगी अयोगी शैलेसी ।
 अंतिम दुगनय जाणोजी ॥
 साधनताए निजगुण व्यक्ति ।
 तेह सेवना वखाणोजो ॥ श्री० ८ ॥
 कारण भाव तेह अपवादे ।
 कार्यरूप उत्सर्गेजी ॥
 आत्म भाव ते भाव द्रव्य पद ।
 बाह्य प्रवृत्ति निःसर्गेजी ॥ श्री० ९ ॥
 कारण भाव परंपर सेवन ।
 प्रगटे कारज भावोजी ॥

कारज सिद्धे कारणता व्यय ।

शुचि परिणामिक भावोजी

॥ श्री० १० ॥

परमगुणी सेवन तन्मयता ।

निश्चय ध्याने ध्यावेजी ॥

शुद्धात्म अनुभव आस्वादि ।

देवचंद्र पद पावेजी ॥ श्री० ११ ॥

॥ श्री सुविधिनाथजिन स्तवन ॥

(थारा मेहेला ऊपर मेह झरुखे

बीजली हो लाल)

दीठो सुविधि जिणंद ।

समाधी रसे भयो हो लाल स० ॥

भास्यो आत्म स्वरूप ।

अनादिनो वीसर्गो हो लाल अ० ॥

सकल विभाग उपाधी ।

थकी मन ओसर्गो हो लाल थ० ॥

सत्ता साधन मार्ग भणी ।

ए संचर्गो हो लाल ॥ भ० ? ॥

तुम प्रभु जाणंग रीति ।

सर्व जग देखता हो लाल ॥ स० ॥

निज सत्ताये शुद्ध ।

सहुमे लेखता हो लाल ॥ स० ॥

पर परिणति अद्वेष ।

पणे उवेखता हो लाल ॥ प० ॥

भोग्यपणे निज शक्ति ।

अनंत गवेश्वता हो लाल ॥ अ० २ ॥

दानादिक निज भाव ।

हता जे परवशा हो लाल ॥ ह० ॥

ते निज सन्मुख भाव ।

ग्रही लही तुज दशा हो लाल ग्र०

प्रभुनी अद्भुत योग ।

स्वरूप तणी रसा हो लाल स्व० ॥

चासे भासे तास ॥

जास गुण तुझ जिसा हो लाल

॥ जा० ३ ॥

मोहादिकनी घूमि ।

अनादिनी उत्तरे हो लाल ॥ अ० ॥

अमल अखंड अलिप्त ।

स्वभावज सांभरे हो लाल स्व० ॥

तत्त्व रमण शुचि ध्यान ।

भणी जे आदरें हो लाल ॥ भ० ॥

ते समता रस धाम ।

स्वामी मुद्रा वरे हो लाल स्वा० ४ ॥

प्रभु छो त्रिभुवन नाथ ।

दास हुं ताहरो हो लाल ॥ दा० ॥

करुणानिधि अभिलाष ।

अठे मुज ए खरो हो लाल ॥ अ० ॥

आतम वस्तु स्वभाव ।

सदा मुज सांभरा हो लाल स० ॥

भासन वासन एह ।

चरण ध्याने धरो हो लाल च० ५

प्रभु मुद्राने योग ।

प्रभु प्रभुता लखे हो लाल ॥ प्र०

द्रव्यतणे साधर्म्य ।

स्व संपत्ति ओलखे हो लाल स्व० ॥

ओळखतां बहु मान ।

सहित रुचि पण वधे हो लाल स०

रुचि अनुयायी वीर्य ।

चरण धारा सधे हो लाल च० ६ ॥

क्षायोपशमिक गुण सर्व ।

थया तुज गुण रसी हो लाल थ० ॥

सत्ता साधन शक्ति ।

व्यक्तता उल्लसी हो लाल ॥ व्य० ॥

हवे संपूरण सिद्ध ।

તળી શી વાર છે હો લાલ ॥ ત૦ ॥

દેવચન્દ્ર જિનરાજ

જગત આધાર છે હો લાલ જ૦ ૭॥

॥ શ્રી શીતલનાથ જિન સ્તવન ॥

(આદર જીવ ક્ષમા ગુણ આદર.)

શીતલ જિન પતિ પ્રભુતા પ્રભુનો ।

મુજથી કહિય ન જાયજી ॥

અનંતતા નિર્મલતા પૂરણતા ।

જ્ઞાન વિના ન ગણાયજી શી૦ ૧ ॥

ચરમ જલધી જલ મિણે અંજલી ।

ગતિ ક્ષિપે અતિ વાયજી ॥

સર્વ આકાશ ઉલંઘે ચરણે ।

પણ પ્રભુતા ન ગણાયજી શી૦ ૨ ॥

सर्व द्रव्य प्रदेश अनन्ता ।

तेहथी गुण पर्यायजी ॥

तास वर्गथी अनन्त गणुं प्रभु ।

केवल ज्ञान कहायजी ॥ शी० ३ ॥

केवल दर्शन एम अनन्तु ।

ग्रहे सामान्य स्वभावजी ॥

स्वपर अनन्तथी चरण अनन्तु ।

स्मरण संवर भावजी ॥ शी० ४ ॥

द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव गुण ।

राजनीति ए चारजी ॥

त्रास विना जड चेतन प्रभुनी ।

कोइ न लोपे कारजी ॥ शी० ५ ॥

शुद्धाशय स्थिर प्रभु उपयोगे ।

જે સમરે તુઘ્ન નામજી
 અવ્યાબાધ અનંતો પામે ।
 પરમ અમૃત સુખ ધામજી શી૦ ૬ ॥
 આણા હૈશ્વરતા નિર્ભયતા ।
 નિર્વાંછકતા રૂપજી ॥
 ભાવ સ્વાધીન તે અવ્યય રીતે ।
 એમ અનંત ગુણ ભૂષજી ॥ શી૦ ૭ ॥
 અવ્યાબાધ સુખ નિર્મલ તે તો ।
 કરણ જ્ઞાને ન જણાયજી
 તેહજ એહનો જાણંગ ભોક્તા ।
 જે તુમ સમગુણ રાયજી શી૦ ૮ ॥
 એમ અનંત દાનાદિક નિજ ગુણ ।
 વચનાતીત પંડૂરજી ॥

वासन भासन भावे दुर्लभ ।
 प्राप्ति तो अति दूरजी ॥ शी० ९ ॥
 सकल प्रत्यक्षपणे त्रिभुवन गुरु ।
 जाणुं तुज गुण ग्रामजी ॥
 बीजुं कांढ न मांगु स्वामी ।
 एहिज छे मुज कामजी ॥ शी० १० ॥
 एम अनंत प्रभुता सरदहता ।
 अरचे जे प्रभु रूपजी ॥
 देवचंद्र प्रभुता ते पामे ।
 परमानंद स्वरूपजी ॥ शी० ११ ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन स्तवन ॥
 (पांडव पांचे वांदतां मन मोहेरे.)

श्री श्रेयांस प्रभु तणो ।

अति अद्भुत सहजानंदरे ॥

गुण इक विध त्रिक परिणम्यो ।

एम गुण अनंतनो बृंदरे ।

मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परे ।

नित्य दीपतो सुखकंदरे ॥

निज ज्ञाने करी ज्ञेयनो ।

ज्ञायक ज्ञाता पद ईशरे ॥

देखे निज दरशण करी ।

निज दृश्य सामान्य जगीशरे

॥ मु० २ ॥

निज रम्ये रमण करो ।

प्रभु चारित्रे रमता रामरे ॥

भोग्य अनंतने भोगवो ।

भोगे तेणे भोक्ता स्वामरे मु० ३ ॥

देय दान नित दीजते

अति दाता प्रभु स्वयमेवरे ।

पात्र तुमे निज शक्तिना ॥

ग्राहक व्यापकमय देवरे ॥ मु० ४ ॥

परिणामी कारजतणो ।

कर्त्ता गुण करणे नाथरे ॥

अक्रिय अक्षय स्थितिमयी ।

निकलंक अनंती आथरे ॥ मु० ५ ॥

परिणामी सत्ता तणो ।

आविर्भाव विलास निवासरे

सहज अकृत्रिम अपराश्रयी ।

निर्विकल्पने निःप्रयासरे ॥ मु० ६ ॥

प्रभु प्रभुता सभारता ।

गातां करतां गुण ग्रामरे ॥

सेवक साधनता वरे ।

निजसंवर परिणति पामरे मु० ७ ॥

प्रगट तत्त्वता ध्यावता ।

निज तत्त्वनो ध्याता थायरे ॥

तत्त्व रमण एकाग्रता ।

पूरण तत्त्वे एह समायरे ॥ मु० ८ ॥

प्रभु दीठे मुज सांभरे ।

परमात्म पूरणानंदरे ॥

देवचंद्र जिन राजना ।

नित्य वंदो पय अरविंदरे ॥ मु० ९ ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

(पंथडो निहालुरे बीजा जिन तणोरे)

पूजना तो कीजेरे बारमा जिनतणीरे

जसु प्रगट्यो पूज्य स्वभाव ॥

परकृत पूजारे जे इच्छे नहीरे ।

साधक कारज दाव ॥ पू० १ ॥

द्रव्यथी पूजारे कारण भावनोरे ।

भाव प्रशस्त ने शुद्ध ॥

परम इष्ट वल्लभ त्रिभुवन धणीरे

वासुपूज्य स्वयंबुद्ध ॥ पू० २ ॥

अतिशय महिमारे अति उप-

गारतारे ।

निर्मल प्रभु गुण राग ॥

सुरमणी सुरघट सुरतरु तुच्छतेरे ।

जिन रागी महा भाग ॥ पू० ३ ॥

दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मनारे ।

प्रभु प्रभुतालय लीन ।

शुद्ध स्वरूपी रूपे तन्मयीरे ।

तसु आस्वादन पीन ॥ पू० ४ ॥

शुद्ध तत्त्व रसरंगी चेतनारे ।

पामे आत्म स्वभाव ॥

आत्मालंबी निजगुण साधतारे ।

प्रगटे पूज्य स्वभाव ॥ पू० ५ ॥

आप अकर्त्ता सेवाधी ह्वेरे ।

सेवक पूरण सिद्धि ॥

निज धन न दिए पण आश्रित लहेरे

अक्षय अक्षर ऋद्धि ॥ पू० ६ ॥
 जिनवर पूजारे ते निज पूजनारे ।
 प्रगटे अन्वय शक्ति ॥
 परमानंद विलासी अनुभवेरे ।
 देवचंद्र पद व्यक्ति ॥ पू० ७ ॥

॥ श्री विमल जिन स्तवन ॥
 (दास अरदास सी परे करेजी.)
 विमल जिन विमलता ताहरीजी ।
 अवर बीजे न कहाय ॥
 लघु नदी जिम तिम लंघिएजी ।
 स्वयंभु रमण न तराय ॥ वि० १ ॥
 सयल पुढवी गिरिजल तरुजी ।

कोइ तोले एक हाथ ॥

तेह पण तुज गुण गण भणीजी ।

भाखवा नहीं समरथ ॥ वि० २ ॥

सर्व पुद्गल नभ धरमनाजी ।

तेम अधर्म प्रदेश ॥

तास गुण धर्म पज्जव सहुजी ।

तुज गुण एक तणो लेश वि० ३ ॥

एम निज भाव अनंतनोजी ।

अस्तित्ता केटली थाय ॥

नास्तित्ता स्वपर पद अस्तित्ताजी ।

तुज समकाल समाय ॥ वि० ४ ॥

ताहरा शुद्ध स्वभावनेजी ।

आदरे धरी बहु मान ॥

तेहने तेहिज नीपजेजी ।

ए कोइ अद्भुत तान ॥ वि० ५ ॥

तुम प्रभु तुम तारक विभुजी ।

तुम सम अवर न कोय ॥

तुम दरिशाण थकी हूं तयोर्जी ।

शुद्ध आलंबन होय ॥ वि० ६ ॥

प्रभु तणी बिमलता ओलखीजी ।

जे करे स्थिर मन सेव ॥

देवचंद्र पद ते लहेजी ।

बिमल आनंद स्वयमेव ॥ वि० ७ ॥

॥ अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

(दीठी हो प्रभु दीठी जग गुरु तुज.)

मूरति हो प्रभु

मूरति अनंत जिणंद ।

ताहरी हो प्रभु

ताहरी मुज नयणे बसीजी ।

समता हो प्रभु समता रसनो कंद ।

सहेजे हो प्रभु

सहेजे अनुभव रस लसीजी ॥१॥

भव दव हो प्रभु

भव दव तापित जीव ।

तेहने हो प्रभु

तेहने अमृत घन समीजी ॥

मिथ्या विष हो प्रभु

मिथ्या विषनी टेव ।

हरवा हो प्रभु

हरवा जांगुलि मन रमीजी ॥ २ ॥

भाव हो प्रभु

भाव चिंतामणो एह ।

आत्म हो प्रभु

आत्म संपति आपवाजी ।

एहिज हो प्रभु

एहिज शिव सुख गेह ।

तत्त्व हो प्रभु

तत्त्वालंबन स्थापवाजी ॥ ३ ॥

जाए हो प्रभु जाए आश्रव चाल ।

दीठे हो प्रभु दीठे संवर वधेजी ॥

रत्न हो प्रभु रत्नअगी गुण माल ।

अध्यातम हो प्रभु

अध्यातम साधन सधेजी ॥ ४ ॥

मीठी हो प्रभु मीठी सुरत तुज ।

दीठो हो प्रभु

दीठो रुचि बहु मानथीजो ॥

तुज गुण हो प्रभु

तुज गुण भासन युक्त ।

सेवे हो प्रभु

सेवे तसु भव भय नथीजी ॥ ५ ॥

नामे हो प्रभु नामे अवभुत रंग ।

ठवणा हो प्रभु ठवणा दीठे उल्लसेजी

गुण आस्वाद हो प्रभु

गुण आस्वाद अभंग ।

तन्मय हो प्रभु

तन्मयतायें जे धसेजी ॥ ६ ॥

गुण अनंत हो प्रभु

गुण अनंतनो वृंद ।

नाथ हो प्रभु

नाथ अनंतने आदरेजी ॥

देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आनंद ।

परम हो प्रभु

परम महोदय ते वरेजी ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(सफल संसार अवतार ए हूं गणुं)

धर्म जग नाथनो धर्म सुचि गाइये

आपणो आतमा तेहवो भाविये
जाति जसु एकता तेह पलटे नहीं।
शुद्ध गुण पज्जवा वस्तु सत्तामयी?
नित्य निरवयव बलि एक अक्रिय
पणे ।

सर्वगत तेह सामान्य भावे भणे ॥
तेहथी इतर सावयव विशेषता ।
व्यक्ति भेदे पडे जेहनी भेदता ॥२॥
एकता पिंडने नित्य अविनाशता ।
अस्ति निज ऋद्धिथी कार्यगत भेदता
भाव श्रुत गम्य अभिलाष्य
अनंतता ।

भव्य पर्यायनी जे परावर्त्तिता ॥३॥

क्षेत्र गुण भाव अविभाग अनेकता
नाश उत्पाद अनित्य पर नास्तिता
क्षेत्र व्याप्यत्व अभेद अव्यक्तता ।

वस्तु ते रूपथी निगत अभव्यता ४
धर्म प्राग्भावता सकल गुण शुद्धता
भोग्यता कर्तृता रमण परिणामता
शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता ।

व्याप्य व्यापक तथा ग्राह्य

ग्राहकगता ॥ ५ ॥

संग परिहारथी स्वामि निज

पद लब्धु ।

शुद्ध आत्मिक आनंद पद संग्रह्य ॥

जहवि परभावथी हूं भवोदधि

वस्यो ।

परतणो संग संसारताये

ग्रस्यो ॥ ६ ॥

तहवि सत्ता गुणे जीव ए निग्मलो
अन्य संश्लेष जिम फिटक

नवि सांमलो

जे परोपाधिथी दुष्ट परिणति ग्रही
भाव तादात्म्यमां माहरू ते नहीं ७
तिणे परमात्म प्रभु भक्ति रंगी थइ
शुद्ध कारणरसे तत्व परिणतिमयी
आत्म ग्राहक थये तजे पर ग्रहणता
तत्त्वभोगी थये टले परभोग्यता ८
शुद्ध निःप्रयास निजभाव

भोगी यदा ।

आत्मक्षेत्रे नहीं अन्य रक्षण तदा ॥

एक असहाय निःसंग निरहं दता ॥

शक्ति उत्सर्गनी होय सह

व्यक्तता . ९

तेणे मुज आतमा तुजथको नीपजे

माहरी संपदा सकल मुज संपजे ।

तेणे मन मंदिरे धर्म प्रभु ध्याइये ॥

परम देवचंद्र निज सिद्ध सुख

पाइये ॥ १० ॥

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

आंखडोये मैं आज ओझुंजो दीठारे.

जगत दिवाकर जगत कृपानिधि ।
 बाहाला मारा समवसरणमां बैठारे
 चउमुख चउविह धर्म प्रकाशे ।
 ते मै नयणे दीठारे ।
 भविक जन हरखोरे ।
 निरखी शांति जिणंद ॥ भ० ॥
 उमसम रसनो कंद नही इण
 सरखोरे ॥ १ ॥
 प्रातिहार्य अतिशय शोभा ।
 वाला म्हारा तेतो कहीय न जावेरे
 घूक बालकथो रविकरभरनुं ।
 वर्णन केणीपरे थावेरे भ० ॥ २ ॥
 वाणी गुण पांत्रीश अनोपम ।

વા૦ અવિસંવાદ સ્વરૂપેરે ॥
 ભવ દુઃખ વારણ શિવ સુખ કારણ
 શુધો ધમ પ્રરૂપેરે ॥ મ૦ ૩ ॥
 દક્ષિણ પશ્ચિમ ઉત્તર દિસ મુખ ।
 વા૦ ઠવળા જિન ઉપગારીરે ॥
 તસુ આલંબન લહિય અનેક ।
 તિહાં થયા સમકિત ધારીરે મ૦ ૪
 ષટ્ નય કારજ રૂપે ઠવળા ।
 વા૦ સગ નય કારણ ઠાળીરે ॥
 નિમિત્ત સમાન થાપના જિનજી ।
 એ આગમની વાળીરે ॥ મ૦ ૫ ॥
 સાધક ત્રીન નિક્ષેપા મુખ્ય ।
 વા૦ જે વિણુ ભાવ ન લહિયેરે ॥

उपगारी दुग भाष्ये भाख्या ।
 भाव वंदकनो ग्रहियेरे भ० ॥ ६ ।
 ठवणा समोसरणे जिनसेति ।
 वा० जो अभेदता बाधीरे ॥
 ए आत्मना स्वस्वभाव गुण ।
 व्यक्त योग्यता साधीरे ॥ भ० ७ ।
 भलुं थयुं मैं प्रभु गुणगाया ।
 वा० रसनानो फल लीधोरे ॥
 देवचंद्र कहे माहारा मननो ।
 सकल मनोरथ सीधोरे ॥ भ० ८ ।

॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥
 (चरम जिणेशरुं—ए देशी.)

समवसरण वेसी करीरे ।

बारह परषदा मांहे ॥

वस्तु स्वरूप प्रकाशतारे ।

करुणाकर जगनाहोरे

॥ कुंथु जिनेसरू १ ॥

निरमल तुज मुख वाणी रे ।

जे श्रवणे सुणे ॥

तेहिज गुण मणी खाणीरे ।

कुंथु जिनेसरू २ ॥

गुण पर्याय अनंततारे ।

वलिय स्वभाव अगाह ॥

नयगम भंग निक्षेपनारे ।

हेया देय प्रवाहोरे ॥ कुंथु० ३ ॥

कुंथुनाथ प्रभु देशनारे ।
 साधन साधक सिद्ध ॥
 गौण मुख्यता वचनमांरे ।
 ज्ञान ते सकल समृद्धोरे ॥ कुंथु ४॥
 वस्तु अनंत स्वभाव छे रे ।
 अनंत कथक तसु नाम ॥
 ग्राहक अवसर बोधथीरे ।
 केहेवे अर्पित कामोरे ॥ कुंथु० ५ ॥
 शेष अनर्पित धर्मनेरे ।
 सापेक्ष श्रद्धा बोध ॥
 उभय रहित भासन होवेरे ।
 प्रगटे केवल बोधरे ॥ कुंथु० ६ ॥
 छति परिणति गुण वर्तनारे ।

भासन भोग आणंद ॥

समकाले प्रभु ताहरेरे ।

रम्य रमण गुण वृंदोरे कुंथु० ७ ॥

निज भावे सो अस्तितारे ।

परनास्तित्व स्वभावरे ॥

अस्तिपणे ते नास्तितारे ।

सीय ते उभय स्वभावोरे कुंथु० ८॥

अस्ति स्वभाव जे आपणोरे ।

रुचि वैराग्य समेत ॥

प्रभु सन्मुख्य वंदन करीरे ।

मांगीस आत्म हेतोरे ॥ कुंथु० ९ ॥

अस्ति स्वभाव रुचि थयीरे ।

ध्यातो अस्ति स्वभाव ॥

देवचंद्र पद ते लहेरे ।

परमानंद जमावोरे ॥ कुंथु० १० ॥

॥ श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥

रामचंद्रके बाग चांपो मोरी रह्योरी

प्रणमो श्री अरनाथ ।

शिवपुर साथ खरोरी ॥

त्रिभुवन जन आधार ।

भव निस्तार करोरी ॥ १ ॥

करता कारण योग ।

कारज सिद्धि लहेरी ॥

कारण चार अनूप ।

कार्यार्थी तेह ग्रहेरी ॥ २ ॥

जे कारण ते कार्य ।

थाये पूर्ण पदेरी ॥

उपादान ते हेतु ।

माटी घट ते वदेरी ३

उपादानथी भिन्न ।

जे विणु कार्य न थाय ।

न हुण कारज रूप ।

कर्त्ताने व्यवसाये ॥ ४ ॥

कारण तेह निमित्त ।

चक्रादिक घटभावे ॥

कार्य तथा समवाय ।

कारण नियतने दावे ॥ ५ ॥

वस्तु अभेद स्वरूप ।

कार्यणुं न ग्रहेरी ॥

ते असाधारण हेतु ।

कुंभे थास लहेरी ॥ ६ ॥

जेहनो नवि व्यापार ।

भिन्न नियत बहु भावी ॥

भूमि काल आकाश ।

घट कारण सदभावी ॥ ७ ॥

एह अपेक्षा हेतु ।

आगम मांहे कह्योरी ॥

कारण पद उत्पन्न ।

कार्य थये न लह्योरी ॥ ८ ॥

कर्त्ता आत्म द्रव्य ।

कार्य सिद्धिणोरी ॥

निज सत्तागत धर्म ।

ते उपादान गणोरी ॥ ९ ॥

योग समाधि विधान ।

असाधारण तेह चदेरी ॥

विधि आचरणा भक्ति ।

जिणे निज कार्य सधेरी ॥ १० ॥

नरगति पढम संघघण ।

तेह अपेक्षा जाणो ॥

निमित्ताश्रित उपादान ।

तेहने लेखे आणो ॥ ११ ॥

निमित्त हेतु जिनराज ।

समता अमृत खाणी ॥

प्रभु अवलंबन सिद्धि ।

नियमा एह बखाणी ॥ १२ ॥

पुष्ट हेतु अरनाथ ।

तेहना गुणथी हलीयें ॥

रोझ भक्ति बहु मान ।

भोगध्यानथी मलीयें ॥ १३ ॥

मोढाने उत्संग ।

बेठाने सी चिंता ॥

तिम प्रभु चरण पसाय ।

सेवक थया निचिंता ॥ १४ ॥

अरप्रभु प्रभुता रंग ।

अंतर शक्तिविकासी ॥

देवचंद्रने आणंद ।

अक्षय भोग विलासी ॥ १५ ॥

॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

(देखी कामीनी दोयके कामे व्याप्योरे)

मल्लिनाथ जगनाथ ।

चरण युग ध्याईयेरे ॥ च० ॥

शुद्धात्म प्राग्भाष ।

परम पद पाईयेरे ॥ प० ॥

साधक कारक षट्क ।

करे गुण साधनारे ॥ क० ॥

तेहिज शुद्ध स्वरूप ।

थाये निराबाधनारे ॥ था० १॥

कर्त्ता आत्म द्रव्य ।

कार्य निज सिद्धतारे ॥ का० ॥

उषादान परिणाम ।

प्रयुक्त ते कारणतारे ॥ प्र० ॥
 आत्मसंपद दान ।
 तेह संप्रदानतारे ॥ ते० ॥
 दाता पात्रने देय ।
 त्रिभाव अभेदतारे ॥ त्रि० २ ॥
 स्वपर विवेचन करण ।
 तेह अपादानथीरे ॥ ते० ॥
 सकल पर्याय आधार ।
 संबंध आस्थानथीरे ॥ सं० ॥
 बाधक कारक भाव ।
 अनादि निवारवारे ॥ अ० ॥
 साधकता अवलंबी ।
 तेह समारवारे ॥ ते० ३ ॥

शुद्धपणे पर्याय ।

प्रवर्तन कार्यमेंरे ॥ प्र० ॥

कर्तादिक परिणाम ।

ते आत्म धर्ममेंरे ॥ ते० ॥

चेतन चेतन भाव ।

करे समवेतमेंरे ॥ क० ॥

सादि अनतो काळ ।

रहे निज खेतमेंरे ॥ र० ४ ॥

पर कर्तृत्व स्वभाव ।

करे तां लगे करेरे ॥ क० ॥

शुद्ध कार्य रुचि भास ।

थये नवि आदरेरे ॥ थ० ॥

शुद्धात्म निज कार्य ।

रुचे कारक फिरेरे ॥ रु० ॥

तेहिज मूल स्वभाव ॥

ग्रहे निज पद बरेरे ॥ ग्र० ५॥

कारण कार्य रूप ।

अछे कारक दशारे ॥ अ० ॥

वस्तु प्रगट पर्याय ।

एह मनमें वस्यारे ॥ ए० ॥

पण शुद्ध स्वरूप ध्यान ।

ते चेतनताग्रहेरे ॥ ते० ॥

तव निज साधक भाव ।

सकल कारक लहेरे ॥ स० ६ ।

माहारुं पूर्णानंद ।

प्रगट करवा भणीरे ॥ प्र० ॥

पुष्टालंबन रूप ।

सेव प्रभुजी तणीरे ॥ से० ॥

देवचंद्र जिनचंद्र ।

भक्ति मनमें धरोरे । भ० ॥

अव्याबाध अनंत ।

अक्षय पद आदरोरे ॥ अ० ७ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

(ओलंगडी २ सुहेली होश्री श्रेयांसनीरे)

ओलंगडी ओलंगडी तोकीजे

श्री मुनिसुव्रत स्वामीनीरे

जेहथी निज पद सिद्धि ॥

केवल केवल ज्ञानादिक गुण

बल्लभेरे ।

लहिण सहेज समृद्धि ॥ ओ० १ ॥

उपादान उपादान निज

परिणति वस्तुमीरे ।

पण कारण निमित्त आधीन ॥

पुष्ट अपुष्ट दुबिध ते रुपदिश्योरे ।

ग्राहक विधि आधीन ॥ ओ० २ ॥

साध्य साध्य धर्म जे मांहे होवेरे ।

ते निमित्त अति पुष्ट ॥

पुष्पमांहे तिलवासक वासनारे ।

नवि प्रध्वंशक दुष्ट ॥ ओ० ३ ॥

दंड दंड निमित्त अपुष्ट घडा

तणोरे ।

य घटता तसु मांह ॥

साधक साधक प्रध्वंशकता अछेरे ।

तिणे नहीं नियत प्रवाह ॥ ओ० ४ ॥

षट्कारक षट्कारक ते कारण

कार्यसुरे ।

जे कारण स्वाधीन ॥

तेकर्त्ता तेकर्त्ता सहु कारक ते वसुरे

कर्म ते कारण पीन ॥ ओ० ५ ॥

कार्य कार्य संकल्पे कारक दशारे ।

छति सत्ता सदुभाब ॥

अथवा तुल्य धर्मने जोयवेरे ।

साध्यारोपण दाव ॥ ओ० ६ ॥

अतिशय अतिशय कारण

કારક કરણતારે ।

નિમિત્ત અને હપાદાન ॥

સંપ્રદાન સંપ્રદાન કારણ
પદ ભવનથી રે ।

કારણ વ્યય અપાદાન ॥ ઓ० ૭ ॥

ભવન ભવન વ્યય વિણુ
કારજ નષિ હોવેરે ।

જિમ દૃષદે ન ઘટત્વ ॥

શુદ્ધાધાર શુદ્ધાધાર
સુગુણનો દ્રવ્યઢેરે ।

સસાધાર સુતત્વ ॥ ઓ० ૮ ॥

આતમ આતમ કર્તા કાર્ય સિદ્ધતારે
તસુ સાધમ જિનરાજ ॥

प्रभु दिठे प्रभु दिठे कारज

रुचि ऊपजेरे

प्रगटे आत्म समाज ॥ ओ० ९ ॥

बंदन बंदन नमन सेवन

बली पूजनारे ॥

स्मरण स्तवन बली ध्यान ॥

देवचंद्र देवचंद्र कीजे जगदीशानुरे

प्रगटे पूर्ण निधान ॥ ओ० १० ॥

॥ श्री नमिनाथ जिन स्तवन ॥

(पीछोलारी पाल उभा दोय राजवीरे.)

श्री नमि जिनवर शेष ।

घनाघन उनम्योरे ॥ घ० ॥

दिठां मिथ्यारोर ।

भविक चित्तथी गम्योरे ॥ भ० ॥

शुचि आचारणा रीतिते ।

अभ्र वधे बडारे अ० ॥

आत्म परिणति शुद्ध ।

ते वोज झबुकडारे ॥ ते० १ ॥

वाजे वायु सुवायु ।

ते पावन भावनारे ॥ ते० ॥

इंद्र धनुष्य त्रिकयोग ।

ते भक्ति एक मनारे ॥ ते० ॥

निर्मल प्रभु स्तव घोष-

ध्वनि घन गर्जनारे ॥ ४४० ॥

तृष्णा ग्रीष्म काल ।

तापनी तर्जनारे ॥ ता० २ ॥

शुभ लेख्यानी आलि ।

ते बग पंक्ति बनीरे ॥ ते० ॥

श्रेणी सरोवर हंस ।

वसे शुचि गुण मुनिरे ॥ व० ॥

चउगति मारग बंध ।

भबिक निज घर रह्यारे ॥ भ० ॥

चेतन समता संग ।

रंगमें डमह्यारे ॥ रं० ३ ॥

सम्यग् दृष्टि मोर ।

तिहां हरखे घणुंरे ॥ ति० ॥

देखी अद्भुत रूप ।

परम जिनवर तणुंरे ॥ प० ॥

प्रभु गुणनो उपदेश ।

ते जलधारा वहीरे ॥ ते० ॥

धर्म रुचि भूमि ।

मांहे निश्चल रहीरे ॥ मां० ४ ॥

चातक भ्रमण समूह ।

करे तब पारणोरे ॥ क० ॥

अनुभव रस आस्वाद ।

सकळ दुःख चारणोरे ॥ स० ॥

अशुभाचार निवारण ।

तृण अंकूरतारे ॥ तृ० ॥

विरतीतणा परिणाम ।

ते बीजनी पूरतारे ॥ ते० ५ ॥

पंच महाव्रत धान्य ।

तणां कर्षण वध्यांरे ॥ त० ॥

साध्य भाव निज स्थापी ।

साधनतार्ये सध्यारे ॥ सा० ॥

क्षाधिक दरिसण ज्ञान ।

चरण गुण उपनारे ॥ च० ॥

आदिक बहु गुण सस्य ।

आतम घर नीपनारे ॥ आ० ६ ॥

प्रभु दरिसण महामेह ।

तणे परवेशमेरे ॥ त० ॥

परमानंद सुभिक्ष ।

थयामुज देशमेरे ॥ थ० ॥

देवचंद्र जिनचंद्र ।

तणो अनुभव करोरे ॥ त० ॥

सादि अनंतो काल ।

आत्म सुख अनुसरोरे ॥ आ० ७

॥ श्री नेमीनाथ जिन स्तवन ॥

(पद्म प्रभ जिन जइ अलगा बह्या.)

नेमि जिनेश्वर निज कारज कयौ ।

छांड्यो सर्व विभावोजी ॥

आत्म शक्ति सकल प्रगट करी ।

आस्वाद्यो निज भावोजी ॥ ने० १ ॥

राजुल नारीरे सारी मति धरी ।

अवलंब्या अरिहंतोजी ॥

उत्तम संगेरे उत्तमता बधे ।

अधे आनंद अनंतोजी ॥ ने० २ ॥

धर्म अधर्म आकाश अचेतना ।

ते विजाती अग्राह्योजी ॥

पुद्गल ग्रहबेरे कर्म कलंकता ।

बाधे बाधक बाह्योजी ॥ ने० ३ ॥

रागी संगेरे राग दशा बधे ।

थाए तिणे संसारोजी ॥

निरागीधीरे रागनुं जोडवुं ।

लहिए भवनो पारोजी ॥ ने० ४ ॥

अप्रशस्ततारे टाली प्रशस्तता ।

करतां आश्रव नाशोजी ॥

संवर बाधेरे साधे निर्जरा ।

आत्म भाव प्रकाशोजी ॥ ने० ५ ॥

नेमि प्रभु ध्यानेरे एकत्वता ।

मिज तत्वे एक तानोजी ॥

शुद्ध ध्यानेरे साथि सुसिद्धिता ।

लहिये मुक्ति मिदानोजी ॥ ने० ६ ॥

अगम अरूपीरे अलख अगोचरु ।

परमात्म परमीशोजी ॥

देवचंद्र जिनवरनी सेवना ।

करतां वाधे जगोशोजी .. ने० ७ ॥

॥ पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(कडखानो-देशी.)

सहज गुण आगरो

स्वामी सुख सागरौ ॥

ज्ञान वैरागरो प्रभु सवायो ॥

शुद्धता एकता तीक्ष्णता भावथी ।
मोह रिपु जीति

जय पडह वायो ॥ १ ॥

: वस्तु निजभाव अविभास

निकलंकता ।

परिणति वृत्तिता करी अभेदे ॥

भाव तादात्म्यता शक्ति उल्लासथी

संतती योगने तुं उछेदे ॥ २ ॥

दोष गुण वस्तुनी लखीय यथार्थता

लही उदासीनता अपरभावे ॥

ध्वंस तज्जन्यता भाव कर्त्तापणुं ।

परम प्रभु तुं रम्यो

निज स्वभावे ॥ ३ ॥

શુભ અશુભ ભાવ ।

અવિભાસ તહકોકતા ।

શુભ અશુભ ભાવ ।

તિહાં પ્રભુ ન કીધું ॥

શુદ્ધ પરિણામતા વીર્યં કર્તા થઈ ।

પરમ અક્રિયતા અમૃત પીધું ॥ ૪ ॥

શુદ્ધતા પ્રમુ તણી આત્મ ભાવે રમે ।

પરમ પરમાત્મતા તાસ થાએ ॥

મિશ્ર ભાવે અહે ત્રિગુણની ભિન્નતા ।

ત્રિગુણ એકત્વ તુજ ચરણ આએ ॥૫

ઉપશમ રસ ભરી સર્વ જન શંકરી

મૂર્તિ જિનરાજની આજ મેટી ॥

કારણે કાર્ય નિષ્પત્તિ શ્રદ્ધાન છે ।

तेणे भव भ्रमणनी भीड मेटी ॥६॥
 नगर खंभायते पार्श्व प्रभु दरशने ।
 विकसते हर्ष उत्साह बाध्यो ॥
 हेतु एकत्वता रमण परिणामथी ।
 सिद्धि साधकपणो आज साध्यो ।
 आज कृतपुन्य धन्य ।

दीह माहरो थयो ॥

आज नर जन्म में सफल भाव्यो ।
 देवचंद्र स्वामि त्रैविशमो वंदियो ॥
 भक्तिभर चित्त तुज ।

गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

(कडखानी-देशी)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी
जगतमां एटलुं सुजश लीजे ॥

दास अवगण भयौ जाणी

पोता तणो ।

दयानिधि दीन पर दया कीजे ॥१॥

राग द्वेषे भयौ मोह वैरी नडयो ।

लोकनी रीतमां घणुंए रातो ॥

क्रोध वश धमधम्यो

शुद्ध गुण नवि रम्यो ।

भम्यो भवमाहे हुं

विषय मातो ॥ २ ॥

आदर्श आचरण लोक उपचारथी

शास्त्र अभ्यास पण कोइ कोधो ॥

शुद्ध श्रद्धान वाली आत्म

अवलंब विनु ।

तेहवो कार्य तेणे को न सीधो ॥ ३ ॥

स्वामि दर्शन समो ।

निमित्त लही निर्मलो ।

जो उपादान ए शुचि न थाओ ॥

दोष को वस्तुनो अहवा

उच्यम तणो ।

स्वामि सेवा सही निकट लासे ॥ ४ ॥

स्वामि गुण ओलखी ।

स्वामिने जे भजे ।

दर्शन शुद्धता तेह पामे ॥

ज्ञान चारित्र्य तप वीर्य उल्लासथी
कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ ५
जगत वत्सल महावीर ।

जिनवर सुणी ।

चित प्रभु चरणने शरण बास्यो ॥
तारजो बापजी बिरुद निज राखव
दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ।
विनती मानजो शक्ति ए आपजो
भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे ॥
साधि साधक दशा ।

सिद्धता अनुभवे ।

देवचंद्र विमल पभुता प्रकाशे ॥ ७

॥ कलशरूप पचीशमुं स्तवन ॥

चोविशो निन गुण गाईये ।

ध्याइये तत्त्व स्वरुभोजी ॥

परमानंद पद पाईये ।

अक्षय ज्ञान अनूपोजी , चो० १॥

चउदहसे वावन भला ।

गणधर गुण भंडारोजी ॥

समतामयी साहु साहुगी ।

सावय सावयी सारोजी ॥चो० २॥

वर्द्धमान जिनवर तणो ।

शासन अति सुखकारोजी ॥

चोविह संघ विराजतो ।

दुःषम काल आधारोजी ॥ चो० ३॥

जिन सेवनथी ज्ञानता ।
 लहे हिताहित बोधोजी ॥
 अहितत्यागहित आदरे
 संयम तपनी शोधोजी ॥ चो० ४ ॥
 अभिनव कर्म अग्रहणता ।
 जीरण कर्म अभावोजी ॥
 निःकरमीने अबाधता ।
 अवेदन अनाकुल भावोजी । चो० ५ ॥
 भाव रोगना विगमथी ।
 अचल अक्षय निराबाधोजी ॥
 पूर्णानंद दशालही ।
 विलसे सिद्ध समाधोजी ॥ चो० ६ ॥
 श्रीजिनचंद्रनी सेवना ।
 प्रगटे पुन्य प्रधानोजी ॥

सुमति सागर अति उल्लसै ।
 साधु रंग प्रभु ध्यानोजी ॥ चो० ७ ॥
 सुविहित स्वरतर गच्छवरु ।
 राजसागर उवझायोजी ॥
 ज्ञान धर्म पाठक तणो ।
 शिष्य सुजस सुखदायोजो ॥ चो० ८ ॥
 दीपचंद्र पाठक तणो ।
 शिष्य स्तवे जिनराजोजी ॥
 देवचंद्र पद सेवतां ।
 पूर्णानंद समाजोजी ॥ चो० ९ ॥



ॐ अर्हं नमः

महोपाध्याय श्रीमद् देवचंद्र
महाराज अने तत्कृतपुस्तको

ज्ञानदर्शनचारित्र-

व्यक्तरूपाय योगिने

श्रीमते देवचन्द्राय,

संयताय नमोनमः ॥ ३ ॥

द्रव्यानुयोगगीताथर्षे,

व्रताचारप्रपालकः

देवचन्द्रसमः साधु,

रर्षाधीनो न दृश्यते. ॥ ४ ॥

वाचकस्य महारागी,
 सर्वजनोपकारकः,
 संप्रति यस्य सद्ग्रन्थे,
 स्तस्त्वबोधः प्रजायते ॥ ५ ॥

आत्मोद्धारामृतं यस्य,
 स्तवनेषु प्रदृश्यते
 त्रिविधतापतसानां,—
 पूर्णशान्तिप्रदायकम् ॥ ६ ॥

आनन्दयनगीतार्थ—
 पदस्तवनपूजकः
 गच्छे खरतरे तस्य
 समःकोऽपि न योगिराहू ॥ ७ ॥
 आत्मशमामृतस्वादी,

शास्त्रोद्यानविहारवान्
 यत्कृतशास्त्रपाथोधौ,
 स्नानं कुर्वन्ति सज्जनाः ॥ ८ ॥

सिद्धान्तपारदृश्वा यो,
 गुणानुरागिशेखरः
 माध्यस्थ्यं यस्य सञ्चिते,
 तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ ९ ॥

गुर्जरोर्व्यां च सौराष्ट्रे,
 मेदपाटे च मालवे,
 लाटदेशे च पञ्जाबे,
 मरुदेशे स्वपादतः ॥ १० ॥
 विहाराश्च कृता नैके,
 लोकानां बोधहेतवे

ज्ञानिने देवचन्द्राय,

पूर्णप्रेम्णा नमोनमः ॥ ११ ॥

संभूत अन्तरात्मा य,

आत्मानुभववेदकः

अप्रमत्तदशायोगी,

जिनेन्द्राणां प्रसेवकः ॥ १२ ॥

धृतागमप्रलीनाय,

भक्ताय ब्रह्मरागिणे

चिदानन्दस्वरूपाय,

सर्वसंघस्य रागिणे ॥ १३ ॥

ध्यानसमाधिरक्ताय,

विश्ववन्द्याय साधवे

श्रीमते देवचन्द्राय,

पूर्णप्रीत्या नमोनमः ॥ १४ ॥
 जैनसंघस्य सेवायै,
 सर्वस्वार्पणकारिणे
 श्रीमते देवचन्द्राय
 शुद्धात्मने नमोनमः ॥ १५ ॥
 भारतजैनसंघे यः,
 प्रादुर्भूतो महासुनिः
 मोहतमोविनाशेन,
 देवचन्द्रो हि भास्करः ॥ १६ ॥
 शीतलः सर्वलोकाना-
 मान्तरशान्तिकारकः
 क्षमा पृथ्वीसमा यस्य,
 गांभीर्यं सागरोपम् ॥ १७ ॥

धैर्यं मेरुसमं यस्य,

गङ्गावन्निर्मलं मनः

तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,

पूर्णप्रीत्या नमोनमः ॥ १८ ॥

कायोधर्ममयो यस्य,

वचश्च विश्वपावकम्

मन आत्मनि संलग्न-

मात्मा लीनः प्रभौ सदा ॥ १९ ॥

तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,

त्याग्निने धर्मरागिणे

नमः श्रीविश्वपूज्याय,

विश्वकल्याणकारिणे ॥ २० ॥

भावमेघस्वरूपाय

विश्वोपग्रहकारिणे

नमः श्रीदेवचन्द्राय

सिद्धांतपारगामिने ॥ २१ ॥

सर्वगच्छेषु माध्यस्थ्यं,

यस्य सत्यं प्रतिष्ठितम्

तस्मै श्रीदेवचन्द्राय,

पूर्णाप्रोत्या नमोनमः ॥ २२ ॥

स्वपरगच्छमाध्यस्थ्यं,

यस्य ज्ञानेन शोभते

सर्वं गच्छसम ! श्रीमद् !

देवचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥ २३ ॥

तपागच्छीयसाधुभिः

सार्धं भैत्रो प्रवर्तकः

आदर्शो देवचन्द्रोऽभूत्

सर्वसाधुशिरोमणिः ॥ २४ ॥

देवचन्द्रकृतग्रन्थान्,
स्तुवेऽहं भक्तिभावतः

अमृतसागरा यत्र,
विद्यन्ते सुखकारकाः ॥ २५ ॥

गुणानुरागयोगेन,
देवचन्द्रमहामुनेः

स्तुतिःकृता तपागच्छे,
बुद्धिसागरसूरिणा ॥ २६ ॥

गुणिनां गुणरागेण,
व्यक्ता भवन्ति सद्गुणाः

दोषास्त्याज्या गुणा ग्राह्या
भाषते बुद्धिसागरः ॥ २७ ॥

ले. बुद्धिसागरसूरिः

पं	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
५	श्रीसंभव.	श्रीसंभव	५
११	दीठो	दीठो	१६
१४	सुरितिर	सुरतिरि	,,
२	तोक्षणरे	तीक्षणरे	२२
३	उ-सूत्र	उत्सूत्र	३०
३	राखू	राखू	३८
१०	ज्ञानने	ज्ञानने	,,
५	नवीमानुं	नविमानुं	४०
८	करुणासागर करुण रससागर ४५.		
४	सुगतिमति	सुगतमति	४८
११	कीजे	कीजे	४८
१२	नेभिनाथ	नेमिनाथ	५७
८	॥ ५ ॥	॥ ४ ॥	५९
१०	काप्रमाणे	काल प्रमाणे	,,
१	आ-म	आत्म	६०

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
३	लेइपासंगे	लेइयासंगे	६३
८	असखित	असंखित	११
१	०	रे	६९
६	हे	है	७१
८	मंडरोसें	भंडारोसें	११
९	हे	है	११

देवचंद्र चौवीसी

१	उपनोरे	उपनीरे	४
४	जिथ्री	जि० श्री०	२१
८	वखाणोजो	वखाणोजी	२५
८	जिथ्री	जि० श्री०	२१
३	विभाग	विभाव	२७
११	सांभरी	सांभरो	२९
६	प्रभुनो	प्रभुनी	३१
६	निवच्छि०	निर्वाञ्छकू.	३३

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र
६	०	म १ ॥	३५
२	ममारता	संभारतां	३७
४	निग्मलो	निरमलो	४९
६	तुजथको	तुजथकी	५०
३	धम	धर्म	५२
४	अस्तितरे	अस्तितारे	५६
१३	वातु	वस्तु	५८
९	शुद्ध	शुद्ध	६२
७	अनतो	अनंतो	६४
१२	माहारुं	माहारुं	६५
१	०व	नवि	६८
२	कोयता	कीकता	७९

हमारी ओरसे प्रकाशित ज्ञानविन्दु.

१ चैत्यवन्दस्तवन संग्रह	भेट
२ भावप्रकरण--संस्कृत	११
३ स्नात्रपूजा	११
४ दादासाहसकी बड़ी पूजा	११
५ हरिवियाम	११
६ जगानन्दकेशलीचरित्र संस्कृत	११
७ मज्झायमसंग्रह	११
८ ईर्यापथिकका नक्शा	११
९ चोविशदण्डकका नक्शा	११
१० जीवाजीवराशिप्रकाश	११
११ संस्कृत चैत्यवन्दस्तुति चौविमी.	११

ली०

श्री हरिसागर जैन पुस्तकालय
लोहाघट (मारवाड)

મીલનૈકા પત્તા.



૧ શ્રીહરિસાગર જૈન પુસ્તકાલય.

ઠિ. જાટાવાસ,

લોહાધટ—મારવાડ

૨ શેઠ રૂપચંદ્રજી રીસખદાસજી

ગોલછ

બીકાનેર - રાજપુત

૩ સ્વરત્નગચ્છ જૈન ધર્મશાળા.

ફવેરીવાડા, કોઠારી પોલ

અમદાવાદ.

